# दिव्य जीवन

## श्री 108 बाबा श्री रामरतनदास जी महाराज

## स्थान—करह

॥ श्री रामचन्द्रायनमः ॥

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १०८

# श्री रामरतनदास जी महाराज

( करह वाले बाबा )

का

# दिव्य जीवन

:: लेखक ::

श्रीरामजी शास्त्री

:: प्रकाशक ::

साकेतवासी

अनन्त श्री बाबा रामदासजी महाराज

( छोटे बाबा करह )

❑

:: संस्करण ::

चतुर्थ ( वर्ष २००८ )

❑

:: पुस्तक प्राप्ति स्थान ::

श्री विजय राघव सरकार ट्रस्ट

करह, जिला-मुरैना ( मध्यप्रदेश )

❑

फोन नं. ०७५३२ - २३९२०९

❑

:: न्यौछावर ::

इकत्तीस रुपये ( ३१/- रुपये )

शिष्य को अपने करुणा–पूर्ण हृदय से लगा लिया और वे भाव–विह्वल होकर बोले–''आज तुमने मुझे माँ से मिला दिया'' देखने वालों की आँखें सजल हो गईं।

क्वार–शुक्ल पक्ष अष्टमी के दिन माता की प्रतिष्ठा की गयी। यह प्रतिष्ठा अष्ट भुजी महासरस्वती देवी की थी। कुछ महीनों बाद अष्टा दश भुजी श्री महालक्ष्मी जी की मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी। और तभी से चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी का मेला लगने लगा। सुन्दर मंदिर का अवशिष्ट निर्माण पूरा किया गया। जिस स्थान पर माता की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई वहाँ विष्णु यज्ञ का यज्ञ–कुण्ड था। यज्ञ से पूर्व यहीं खड़े होकर नेपाली साधु ने घोषणा की थी कि ''यहाँ माता कि दिव्य मूर्ति स्थापित होगी, उनका विशाल भवन बनेगा।'' उनकी भविष्यवाणी पूर्ण सफल हुई। सन्तों की लीला अति विचित्र है। कौन जान सकता है ? जब वे ही कृपा करें तभी समझ में आ सकती है– ''सो जानहि जेहि देहु जनाई।''

आकाश में उठा हुआ माँ का उज्जवल एवं धवल मंदिर–शिखर तथा उस पर फहराती हुई दुष्टों के हेतु खतरे की झण्डी की तरह लाल ध्वजा कोसों दूर से दृष्टिगोचर होती है और दूर–दूर तक गतागत पथिकों के नेत्रों को हठात् अपनी ओर आकृष्ट कर 'करह' के स्थान तथा भगवती की पावन स्मृति कराती हुई उन्हें राह दिखाती है एवं शांति का सन्देश देती है। स्थापना के क्षण से लेकर प्रतिवर्ष प्रतिदिन विशेषतः नवरात्रि में आसपास के ग्रामों के सहस्त्रों श्रद्धालु नर–नारी आकर दर्शन करते हैं।

**श्रवण गोचर ही न अतीत है, नयन गोचर है अब भी वहीं**
**'करह' की यह पर्वत–मालिका कह रही जग से स्वर मुक्त हो।**
**यदि अतीत लखा तुमने कभी विपिनदण्डक में घट योनि को,**
**असित देवल या जमदग्नि को, अथच लोमश को इस लोक में**

उषसि ध्येय अनन्त सश्रीक जो, सतत वेष्टित शिष्य समूह से
रतनदास विराज यहां रहे, कह अतीत वही यह मूर्ति है ?
विगत वैर जहाँ सब जीव हैं, मुखर हैं तरु भी हरिनाम से,
लख अतीत सुरक्षित है यहां, वह पुरातन आर्ष-परम्परा।
कलुष से कलि के भयभीत हो, जागत में न सुरक्षित हो सका,
शरण में जिन के 'कृत' भी यहाँ, कर रहा सुख से दिन यापना।
विगत् भीति जहाँ सब भाँति से विचरते मृग भी मृग भी मृगराज भी,
यह अखंड तपोनिधि संत के, भजन का तप का अनुभाव है।

—रामगोपाल शास्त्री

## अंतिम तीर्थ यात्रा

गंगादितीर्थेषु वसन्ति मत्स्या देवालये पक्षिगणाश्च संति
भावोज्झितास्ते न फलं लभन्ते तीर्थाच्च देवायतनाच्च मुख्यात्
भावं ततो हृत्कमले निधाय तीर्थानि सेवेत समाहितात्मा।

—नारदपुराण

''गंगा आदि तीर्थों में मछलियां निवास करती हैं, देवालयों में पक्षियों के झुण्ड रहते हैं किन्तु भावहीन होने के कारण उन्हें तीर्थ सेवन या मंदिर निवास का फल उपलब्ध नहीं होता। अतः हृदय में भक्तिभाव रखकर एकाग्र चित्त से तीर्थो का सेवन करना चाहिए।''

पुराणकार का यह कथन साधारण जन के लिये है सन्त तो स्वयं तीर्थ हैं, स्वयं मन्दिर हैं।

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थोकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तः स्थेन गदाभृता॥

—श्री मद्भागवत १/१३/१०

युधिष्ठिर जी भक्त प्रबर श्री बिदुर जी से कहते हैं– ''आप जैसे भगवद् भक्त तो स्वयं तीर्थ रूप हैं। आप अपने हृदय में स्थित भगवान् के द्वारा तीर्थों को सच्चे अर्थों में तीर्थ बना देते हैं।''

हमारे परम पूज्य गुरुदेव ने भी तीर्थयात्रा की कामना की। यह यात्रा बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि श्री महाराज जी इससे पूर्व, जब से साधना के मार्ग में आये न किसी कुम्भ स्नान में गये न किसी तीर्थ यात्रा में गये। हाँ, जब से घर में थे तब अपनी माता को लेकर बद्री नारायण आदि तीर्थों में अवश्य गये थे। उसके पश्चात् तो 'करह' की वनस्थली में आ विराजे। वही स्थान तीर्थ रूप हो गया। वे वहीं निरंतर भगवन्नाम में निरत रहते थे। उन्हें बाह्यज्ञान तो जैसे रहता ही नहीं था फिर उन्हें किस तीर्थ की आवश्यकता ?

स्कन्द पुराण–काशी खण्ड के छटे अध्याय में स्पष्ट लिखा है–

**निगृतेन्द्रियग्रामो यत्नैवच वसेन्नरः।**
**तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च।**

''जिसने इन्द्रिय–समूह को वश में कर लिया है, वह जहाँ भी निवास करता है उसके लिये वहीं कुरुक्षेत्र है, नैमिषारण्य है एवं पुष्कर तीर्थ है।''

ये ही कारण हैं कि पूज्य महाराज जी कभी किसी तीर्थ में नहीं गये। साधुओं ने कई बार प्रार्थना भी की तो मुस्कुरा के टाल दिया। लेकिन सवंत् २०१० की साल साधुओं ने पुनः आग्रह किया और इस आग्रह को उन्होंने स्वीकार कर लिया। ऐसा लगता है जैसे उन्होंने पहले से ही मन में संकल्प कर लिया था। किसी को क्या पता था कि महाराज जी श्रीराम–धाम पधारने की तैयारी कर रहे हैं, उसी की यह पूर्व यात्रा है। तीर्थों का संकल्प करते ही उन्होंने दाढ़ी जटा बढ़ा ली। दूसरे वर्ष चैत्र के महीने में तीर्थ यात्रा का आरंभ किया। साथ में दो सौ मूर्तियाँ थीं। आसपास के ग्रामों में समाचार फैल गया। नर नारियों के

झुण्ड दर्शनार्थ दौड़े आये। वे इतने से तृप्त न हुए अत: महाराज जी को अपने–अपने गाँवों में साग्रह लिवा ले गये। बुलाने की होड़ सी पड़ गयी 'निज–निज रुचि सब लेहिं बुलाई।' महाराज जी भी, तो कभी कहीं न जाते थे, सब जगह गये। जनता निहाल हो गयी। उन्हें तो ऐसा सौभाग्य मिला–'जनु मरुभूमि कलपतरु जामा।' गाँव–गाँव में अगाध श्रद्धा के अद्‌भुत दर्शन हुए। धनेला, जरारा नूराबाद होते हुए श्री महाराज जी 'बानमोर' गये। वे जिधर से भी गये, रामनाम का अखण्ड प्रवाह उनके साथ उमड़ता गया। बानमोर में पूज्य गुरुदेव के प्रथम शिष्य बाबा श्री लखनदास जी महाराज के द्वारा निर्मित कराये हुए मन्दिरों में श्री रघुनाथ जी की मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। वहाँ से लश्कर पधारे। लश्कर में वहीं के भक्त रामभरोसे, मदनलाल, चाँदमल ग्यासीराम आदि ने पूज्य चरणों में प्रार्थना की कि नगर की जनता को दर्शन देने की कृपा करें। पूज्य महाराज जी का स्वभाव तो स्वर्गीय था। न वे 'हाँ' कहते न 'ना' कहते। 'जैसी रामजी की इच्छा' बस इतने से शब्द थे। इन्हीं को चाहे 'हाँ' समझिये या 'ना'। भक्तों ने तो उसे 'हाँ' का प्रतीक माना। एक अत्युच्च धवल हंसाकर वाहन निर्मित कराया गया। उस पर पूज्य महाराज जी को बिठाकर नगर–दर्शनार्थ लिवा गये। अपार भीड़ उमड़ पड़ी। श्री रामचन्द्रजी के जनक नगर दर्शन का दृश्य उपस्थित हो गया–

**धाये धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी॥**

आस–पास के छज्जों, खिड़कियों और द्वारों से पुष्प बरसे। राम नाम की ध्वनि, जय जयकार की गूँज, शंख, घंटा, घड़ियाल की ध्वनि ने समस्त नगर के दूषित वातावरण को पावन कर दिया। पूज्य चरणों ने खासगी के मन्दिर में एक रात्रि निवास किया। भक्तों को सेवा का अवसर प्रदान कर कृतकृत्य कर दिया। वहाँ से झांसी पधारे। राधामोहन, निगम, गर्देजी, गोस्वामी, ब्रजबिहारीलाल मुंसरिम, दयाबाई आदि भक्तों ने सेवा की।

# राम राजा के दर्शन

झाँसी से पूज्य महाराज जी समस्त भक्तों सहित ओरछा, पधारे। ओरछा में दो मन्दिर बड़े प्रसिद्ध हैं, एक 'रामराजा' का दूसरा चतुर्भुज जी का। पूज्य महाराज जी जब रामराजा के मन्दिर में गये तो उनकी देह–दशा विचित्र हो गयी। नेत्रों से अविरल अश्रु प्रवाह बह चला। भक्तों ने भावविभोर होकर रामध्वनि की। महाराज जी तन्मय होकर मूर्ति के अभिमुख चित्रित–से हो गये। पूज्य गुरुदेव की 'रामराजा' में अगाध श्रद्धा थी। वे उन्हें निरी मूर्ति की दृष्टि से नहीं देखते थे। वस्तुतः उस मूर्ति की कथा भी विलक्षण ही है। ओरछा की रानी गणेशकुंवरि उस मूर्ति को सवंत् १६२२ में श्री अयोध्या जी से लाई थीं। इस सम्बन्ध में एक दोहा कहा जाता है।

**मधुकरशाह नरेश की रानी कुँवरि गनेस।**
**अवधपुरी से ओरछा लाई अवध नरेस।**

कहते हैं, जिस समय वे सरयू में स्नान कर रही थीं कि उनकी गोद में श्रीरामचन्द्र जी की एक मूर्ति स्वतः आ गयी। रानी उस मूर्ति को ओरछा लाईं और उसकी प्रतिष्ठा कराई। इसलिए भक्तों की भावना के अनुसार 'रामराजा' के रूप में साक्षात् श्री रामचन्द्र जी विराजमान हैं वहाँ के सम्बन्ध में एक दोहा प्रसिद्ध है।

**सर्व व्यापक राम के दो निवास हैं खास,**
**दिवस अयोध्या रहत हैं रैन ओरछा वास।**

सचमुच पूज्य श्री महाराज जी का तो श्री 'रामराजा' में अगाध विश्वास था उनकी अगाध श्रद्धा थी। इस प्रथम–दर्शन में ही जैसे आत्मसमर्पण कर दिया था। ओरछा के बाद महाराज जी चित्रकूट पधारे। चित्रकूट तो वास्तव में तपः स्थली है। आज भी त्यागियों तपस्वियों एवं नाम जापकों की सिद्ध पीठ है। सदा ही नाम ध्वनि गूँजा करती हैं एक कवि ने ठीक ही कहा है :–

कवित्त

**रामध्वनि शब्द सों अकास जहाँ व्यापत रहे**
**राम पर रेखनिसों वसुधा खची रहे।**
**युगल स्वरुप के निमित्त यत्र तत्र छाय**
**नित्त नित्त नई–नई रचना रची रहे।**
**कहत 'बिहारी' जाकी महिमा विलोक लोक–**
**चक्रत सदेव शिवा सारदा शची रहे।**
**अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहू पदारथ की**
**आठोयाम लूट चित्रकूट में मची रहे॥**

चित्रकूट में पहुँचकर तो बड़े महाराज जी की भरत जैसी दशा हो गयी–

**जबहि राम कहि लेहि उसासा।**
**उमगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा।**

दो सौ भक्तों के साथ दो दिन निवास किया। भक्तवर वक्शी जी ने सेवा की।

चित्रकूट पर एक विलक्षण बात हुई। जिस समय पूज्य श्री महाराज जी बैठे थे और भक्तों का समूह श्री राम–नाम–ध्वनि की धारा में अवगाहन कर रहा था। तो एक पर्याप्त मोटा–ताजा वानर कूदकर महाराज जी के पास आ बैठा। पहले तो कुछ भक्तगण उसे देखकर सकपकाये किन्तु वानर राज को निर्विकार बैठे देखकर और भी जोश के साथ नाम–कीर्तन करने लगे। वानरराज ने पूज्य महाराज जी के चरण पकड़ लिये महाराज जी मुस्कुराये। एक भक्त को आज्ञा दी, अधिक सा प्रसाद मंगाया। पूज्य श्री गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथों से उसे खूब प्रसाद खिलाया। जब वानर अच्छी तरह छक गये, तब छलाँग मारकर चलते बने भक्तों ने बजरंगवली की जय–जयकार की।

यह तो हनुमानजी का संकेत था। महाराज जी ने दूसरे दिन समग्र चित्रकूट के वैष्णव सन्तों को प्रसाद पवाया। जानकी कुंड श्री हनुमान धारा कामदगिरि आदि सभी स्थानों से सन्त पधारे। पूज्य बड़े महाराज जी के दर्शनों से सभी अत्यन्त प्रसन्न थे, प्रभावित थे।

वहां से प्रयागराज पधारे। वहाँ 'तुलसीदास जी के स्थान' में निवास किया। बाबू राधामोहन जी ने सेवा का प्रबंध किया। महाराज जी त्रिवेणी में स्नान करने गये। साथ में नापित बालक केदार पहले से ही महाराज जी के साथ था। उसकी बड़ी कामना थी कि त्रिवेणी पर पूज्य महाराज जी का क्षौर कर्म मैं करूंगा। केदार बपचन से ही पूज्य महाराज जी की सेवा में रहा है। उसने महाराज जी को भद्र किया और १०१ रुपयों की भेंट चरणों पर समर्पित की। त्रिवेणी स्नान हुए। समस्त वैष्णवों को 'भण्डारा' दिया गया। तीन दिन निवास करने के अनन्तर श्री अयोध्या पधारे।

## श्री अयोध्या में प्रवेश

**''इयं सरित् सा सरयूरयोध्या-वधू-निबद्ध मणि-मेखलेव**
**करोति वेल्लत्कलहंस-माला-कोलाहलैर्विभ्रम-शिञ्जितानि''**

–रामायण मंजरी

''यह वह सरयू है जो अयोध्या–वधू की कटि में बंधी नील–मणियों की करधनी–सी लगती है और जिसमें तटवर्ती कलहंसों का कलरव मधुर झनकार बन जाता है।''

मार्ग में अखण्ड रामध्वनि होती गयी। दर्शक एवं पथिक देख–देख कर चकित थे। श्रीराम–धाम अयोध्या में जैसे ही प्रवेश किया पूज्य महाराज जी स्नेह–विह्वल हो गये। उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु झरने लगे। अयोध्या के कई प्रसिद्ध सन्त उनकी वृत्ति देखकर अत्यधिक प्रभावित हुए। वे जब हाथ जोड़ने लगे तो महाराज जी ने विनय–मधुर

स्वरों में कहा– ''श्री अयोध्या निवासी तो श्रीराम के 'अतिप्रिय' हैं और जो हमारे आराध्य के अतिप्रिय हैं हमारे लिये तो वे श्रीराम से अधिक वन्दनीय हैं।''

श्री अवध में मणि पर्वत पर निवास किया। वेदान्ती श्रीराम कुमारदास जी ने सब प्रकार की सुविधा प्रदान की। सरयू में स्नान करने गये तो स्नेह में डूब गये। 'यहीं चारों भैया खेलते होंगे, इसी सरयू में स्नान करते होंगे' यह सोचकर विरह–विकल होने लगे सचमुच महाराज जी का जीवन, उनका प्रत्येक क्षण विरहाकुल था– राममय था। उन्हें चटपटी लगी रहती थीं–

**इस तन का दीवा करों बाती डारों जीव।**
**लोही सींचों तेल ज्यों कब मुख देखों पीव॥**

कबीर की यह भावना उनमें साकार हो उठी थी। स्नान के अनन्तर नंगे पैरों अयोध्या के सम्पूर्ण पावन स्थलों के दर्शन करने गये।

विविधत् 'राम अर्चा' सम्पन्न कराई। एक दिन श्री अवध के समस्त सन्तों को प्रसाद पवाया गया। ११ दिन तक श्री अयोध्या जी में निवास किया। श्री अयोध्या जी के सम्पूर्ण वैष्णव साधु इस करुणा की मूर्ति एवं स्नेह से द्रवीभूत तथा अविच्छिन्न नाम–जापक अलौकिक सन्त के दर्शनों से मुग्ध थे। रात दिन अखण्ड कीर्तन, रात दिन कथा–सत्संग, रात दिन साधु सेवा का कार्य बराबर चलता रहा। श्री अवध के आसपास के ग्रामों से सहस्त्रोंजन दर्शनार्थ आये। केवल दर्शक बनके नहीं सेवक बनके सभी ११ दिन तक मणिपर्वत पर जहाँ पूज्य महाराज जी ठहरे थे, प्रेम सेवा एवं ज्ञान की अविच्छन्न त्रिवेणी बहती रही।

श्री अयोध्या जी से बाराबंकी आये। मोहनलाल जी की धर्मशाला में एक दिन निवास किया, दिन रात के अखण्ड नाम कीर्तन ने

धर्मशाला को केवल धर्मशाला ही नहीं 'प्रेमशाला' ही बना दिया। मास्टर कौल, हौसलाबक्श तथा छेदालाल आदि भक्तों ने प्रेम और श्रद्धा से सेवा की। वहाँ से लक्ष्मणपुर (लखनऊ) पधारे। बाबू कामताप्रसाद निगम के यहाँ 'सियावर निवास' में एक दिन निवास किया। डॉ. भोलानाथ कपूर आदि ने बड़ी श्रद्धा से सेवा की। लक्ष्मणपुर से आगरा होते हुए मुरैना पधारे। आगरा में श्री रामचन्द्र इंसपेक्टर, श्री भगवत स्वरूप सुपरिटैण्डेन्ट, बाबू कामताप्रसाद, श्री बिष्णु शंकर वकील, चन्दाराम, लक्ष्मनदास आदि भक्तों ने सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। मुरैना में कदमसिंह के यहाँ एक दिन ठहर कर पूज्य श्री महाराज आश्रम पर पधारे।

## आश्रम पर पुनरागमन

पूज्य श्री महाराज जी जबसे तीर्थाटन कि लिये गये तबसे आश्रम के आसपास के सभी भक्त उदास थे। बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। आश्रम सूना न रहे, पूज्य महाराज यथाशीघ्र हम सबको दर्शन दें, इस कामना से सौ गाँवों के भक्तों ने सम्मिलित होकर एक महीने का अखण्ड नाम–कीर्तन कर रखा था। रामकिशन तथा श्री रामप्रसाद इन दोनों भक्तों ने उसकी व्यवस्था की।

जैसे ही बड़े महाराज जी के आश्रम पर पधारने का समाचार सुना, समस्त भक्त मण्डली के हर्ष का पारावार न रहा। एक महीने का समय वर्षों की तरह बीता। उसके पश्चात् महाराज जी के आगमन से उन्हें उतना ही अपार हर्ष हुआ जैसा १४ वर्षों के अनन्तर लौटकर आए श्री राम को देखकर अयोध्यावासियों को हुआ था। जिन गाँवों, में जिन भक्तों के यहां पहले नहीं जा पाये थे उन गाँवों के आग्रह पर पुनः पधारे। गाँवों से लौटकर कीर्तन की पूर्णाहुति की गयी। कीर्तन करने वाले १० सहस्त्र भक्तों को निमंत्रित कर उन्हें भोजन कराया। इस

यात्रा में कई नगरों एवं ग्रामों के भक्तों ने महाराज जी के चरणों में तीस सहस्त्र के कुछ अधिक ही रुपये चढ़ायें और पूज्य चरणों ने उन सबको तीर्थ में और आश्रम पर जनता जनार्दन की सेवा में लगा दिया। 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये' आजीवन उनका यही नियम रहा। संग्रह के नाम पर उनके पास नाम–धन का ही संग्रह था। इसलिये जनता उन पर मुग्ध थी। संस्कृत के एक कवि का यह कथन ठीक ही है–

**प्रियः प्रजानां दातेव न पुनर्द्रविणेश्वरः**
**आगच्छन वाच्छथते लोकेर्वारिदो न तु वारिधिः**

प्रजाओं को दाता ही प्रिय होता है, धन–संग्रही नहीं लोग आते हुए बादलों का स्वागत करते हैं बढ़ते हुए समुद्र का नहीं।

पूज्य महाराज जी का ग्रामों में जाना था कि साधु मण्डल में भी यह कामना उत्पन्न हुई कि वे उनके स्थानों पर भी पधारें। उन्होंने सस्नेह आग्रह किया तो महाराज जी का हृदय कुछ विचित्र हो गया था। वैसे तो जीवमात्र के प्रति दयालु थे पर इन दिनों उनका हृदय अत्यधिक करुणा–विगलित हो गया था। तनिक भी किसी का जी नहीं दुखाते थे। इसके लिये उन्होंने नियमों के बंधन शिथिल कर दिये थे। वस्तुतः उनका यह नियम–शैथिल्य भविष्य में अधिक नियम–बद्ध होने का पूर्व रूप था। कसने के पूर्व बंधन को ढीला किया ही जाता है। उनकी प्रत्येक क्रिया योजनानुकूल चल रही थी। वे सांतऊ शीतला देवी की यज्ञ में पधारे, हटूपुरा रनजीतसिंह के यहां गये, हरीरामदास जी के आग्रह पर 'मेंढकेश्वर' लछिमनदास के स्नेहवश रऊ के घाट रामवल्लभदास जी के प्रेमवश 'बावरी के श्री हनुमान' श्री गोपालदासजी के आग्रह पर उनके स्थान 'मजरा' और पीतमदास जी के कथन पर 'जौरा' पधारे। श्री रामचरनदास जी के स्थान–'सुपावली' भी गये पर इस कार्यक्रम से उनकी साधना में कोई अन्तर नहीं आया। वह तो गंगा

प्रवाह की तरह निरंतर चलती थी और लोग उसी 'बहती गंगा में' हाथ धो रहे थे। अवगाहन कर रहे थे। पूज्य महाराज जी के मन में कोई बात थी, पर वह इतनी गहराई में थी कि उनके अत्यन्त समीपी भक्त या शिष्य भी नहीं समझ सके। उनका राम–प्रेम चरम–सीमा की ओर बढ़ रहा था, पर अन्दर–ही–अन्दर। ठीक भी था–

**दो.– बात प्रेम की राखिये अपने ही मन मांहि।**
**जैसे छाया कूप ही बाहिर निकसै नाहिं॥**

## श्री राम–राजा की ओर

**अयि दलदरविन्द ! स्यन्दमानं मरन्दं–**
**तव किमपि लिहन्तो मंजु गुंजन्तु भृंगा,**
**दिशि दिशि निरपेक्ष स्तावकीनं विवृण्वन्**
**परिमलमयमन्यो बान्धवो गन्धवाहः॥**

**अर्थ–** ''अयि खिले कमल ! तुम्हारे झरते हुए मकरन्द का पान करने वाले भृंग भले ही मंजु गुंजार करें, किन्तु प्रत्येक दिशा में तुम्हारे परिमल का प्रसार करने वाला वास्तविक बन्ध तो दूसरा ही है और वह है गन्धवाह–पवन।''

'दतिया' के पास 'ब्रह्मबालाजी' के नाम से प्रसिद्ध भगवान सूर्य का एक प्राचीन मंदिर है। उसकी विस्तृत परिधि का स्पर्श करती हुई एक छोटी–सी नदी बहती है– पुष्पावती (पहूज)। उसी के पावन तट पर बागला बन्धुओं ने महाविष्णु–याग का आयोजन किया। उसकी सफल सम्पन्नता के लिये वे सब पूज्य श्री बड़े महाराज जी को लिवा ले गये। वहां तीन दिन के लिये पधारे। यज्ञ की व्यवस्था का अधिकांश भार पूज्य श्री छोटे महाराज जी पर था। पूज्य श्री बड़े महाराज जी तो केवल दर्शन देते रहते। न वे भाषण देते न कीर्तन भजन में उनका

स्वर सुनाई पड़ता था। फिर भी उनकी प्रेममयी, करुणामयी मूर्ति में कुछ ऐसा विलक्षण आकर्षण था कि अपार जन–समूह उनके दर्शनों को दिन भर उमड़ा करता था। यज्ञ में लगभग एक लाख का भण्डारा हुआ और यह सब उन्हीं के प्रताप की अद्‌भुत प्रेरणा थी। भण्डारे के दूसरे दिन पूज्य चरण सहसा उठकर ओरछा की ओर चल दिये। छोटे महाराज जी को पता लगा। वे दौड़कर महाराज जी के चरणों में पड़े और उन्होंने प्रार्थना की कि यज्ञ–कार्य को पूर्णतया सम्पन्न होने दीजिये। पूज्य बड़े महाराज जी ने गद्‌गद् होकर कहा– 'रामराजा बुला रहे हैं, वे इस यज्ञ में अब नहीं हैं मुझे जाने दो।' उनका यह दृढ़ स्नेहाग्रह देखकर पूज्य श्री छोटे महाराज जी अपने समस्त परिकर के सहित साथ ही चल पड़े। ओरछा पहुँचकर समस्त सन्त ब्राह्मणों को भोजन कराया। रात्रि के समय पूज्य बड़े महाराज जी को श्री रामराजा की कुछ विलक्षण लीला दृष्टिगोचर हुई, फलतः सारी रात अपने निद्रा–हीन नेत्रों से गंगा–यमुना की धाराएं बहाते रहे। प्रात–काल भक्तों ने उनकी वह विरह–विह्वल दशा देखी। पूज्य बड़े महाराज जी श्री रामराजा के दर्शन करने गये। घण्टों इकटक निहारते रह गये। आँखों से अश्रुपात हो रहा था। उनकी मूर्ति सम्मुख थी फिर भी उनका विरह उन्हें व्याकुल बना रहा था। उनकी लीला वही जानें–

**दोहा– बिछुरी होय सो फिर मिलें रूठो हू मिल जाये।**
**मिलौं रहें अरू ना मिले तासों कहा बसाय ?**

महाराज जी ने सभी सन्तों और भक्तों को बुलाया। उनसे प्रभु की प्रेरणा बताई कि हमें श्री राम जी की आज्ञा हुई है। 'ईस रजाइ सीस सबही के'। उसके अनुसार अब हम फलाहार ग्रहण करेंगे, किसी के घर न जायेंगे। जो कोई हमारा फलाहार छुड़ाने और घर ले जाने का प्रयत्न करेगा उसे ओरछा में श्री रामराजा पर एक सहस्त्र संतों को भोजन कराना होगा, हवन कराना होगा। उन सन्तों में दो सौ

सन्त श्री अयोध्या जी के होंगे यह संकल्प करके तीन दिन बाद वहां से आश्रम पर आ गये। और वहां उपर्युक्त नियमानुसार रहने लगे। लोग उन्हें घर ले जाने का आग्रह न करें, इस हेतु नियम को अंकित कर मंदिर के सम्मुख लगा दिया गया। जब कोई ऐसा प्रसंग आता तो महाराज जी उसी ओर संकेत कर देते थे।

# महायात्रा की तैयारी

**सदा संहरते चायं कूर्मोऽडगानीव सर्वशः**
**इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिताः**

—गीता २/५८

**अर्थ**—जैसे कछुआ अपने अंगों को अनायास ही बाहर से अपने आप में समेट लेता है वैसे ही जो योगी अपनी इन्द्रियों को विषयों से खींच लेता है वह 'स्थित प्रज्ञ' है।

पूज्य श्री बड़े महाराज जी धीरे—धीरे स्थूल से सूक्ष्म की ओर जा रहे थे, जगत से जगदीश की ओर बढ़ रहे थे, भौतिक देह से दिव्य देह की ओर, मर्त्य—लोक से अमरलोक की ओर उन्मुख हो रहे थे। उस समय और भी मानवता विरोधी कुछ घटनाएँ ऐसी हुईं जिनसे वे और अधिक आकुल होकर अपने अपने आराध्य से मिलने की शीघ्रता करने लगे। आसपास दस्युओं का आतंक फैल रहा था। राजपुरुष उनके दमन में तत्पर हो रहे थे। जन—जीवन भयाक्रान्त हो रहा था। चारों ओर भय एवं आशंका का वातावरण बन रहा था। भोला ग्रामीण दस्यु एवं दस्युओं के दमनकारी दोनों के द्वारा प्रताड़ित था। उनकी करुण पुकार पूज्य चरणों तक आती सुनकर उनके नेत्रों से करुणा झरने लगती थी और कुछ क्षणों तक नेत्र बन्द कर ध्यानावस्थित हो जाते थे। उनकी मूक पीड़ा का अनुमान उन्हें देखकर सहज ही हो

जाता था। अब उन्होंने नियम बन्धन को और कस दिया। ६ महीने से वे केवल स्वल्प फलाहार ही ले रहे थे। इसके पश्चात् तो उन्होंने फलाहार में केवल एक गिलास दूध लेना स्वीकार किया। तीन महीने तक यह नियम इसी रूप में चलता रहा। तीन महीने पश्चात् भक्तों को चरण दबाने से, चरण छुने से रोक दिया। दूसरों से सेवा लेना बन्द कर दिया।

इससे भक्तों में चिंता के चिन्ह प्रकट होने लगे। छोटे महाराज जी भी चिंतित हुए कि यह क्या बात है, महाराज जी क्या करना चाहते हैं।

पूज्य श्री महाराज जी का शरीर दिनों दिन दुबला होने लगा। शरीर तो भौतिक ठहरा। मतलब का साथी है, यदि उसे ठीक से खाने--पीने को न दिया जाये तो वह किसी का साथ नहीं देता। वह तो मौज का साथी है, पर प्रेमियों के मार्ग में मौज कहां है ?

**दोहा- रहिमन मारग कठिन है जहाँ प्रेम को धाम।**
**विकल मूरछा सिसकिवो ये मग के विश्राम॥**

शरीर का रहस्य सन्तों को ज्ञात होता है, वे इसके लालन–पालन में समय नष्ट नहीं करते। सम्बन्ध में उनका स्वर अनुभव पूर्ण है–

**दोहा- देही होइ न आपनी समुझि परी अब मोहि**
**अबहीं ते तजि राखितू आखिर तजि है तोहि।**

पूज्य चरणों का शरीर कृश हो गया। उसमें रोग के चिन्ह प्रकट होने लगे। बहुत से डाक्टर आये। कई अनुभवी वैद्य आए। विविध औषधियाँ हुईं। यद्यपि महाराज जी ने मना कर दिया कि हम कोई औषध न लेंगे, हमारी औषध राम–नाम है। और सचमुच उनके सर्वस्व तो श्रीराम थे। कवि ठाकुर के शब्दों में मानों महाराज जी की ही भावना छिपी हैं :–

कवित्त- राम मेरे पण्डित अखंडित सुदिन
सो धैं राम मेरे गुरु जप मेरे राम नाम है
राम-राम गावत ही राम-राम ध्यावत ही,
राम-राम सोचत कटत आठो याम है।
"ठाकुर" कहत सांची आस मोहि राम ही की,
राम ही से धन और धाम मेरे राम है।
राम मेरे वैद्य विसराम मेरे राम राय,
राम मेरी औषधि जतन मेरे राम हैं।

डाक्टरों ने सलाह दी कि पूज्य महाराज जी थोड़ा-थोड़ा अन्न ग्रहण करने लगें तो अन्न ग्रहण न करने से शरीर में जिस पदार्थ की कमी हो रही है उसकी पूर्ति होने लगेगी और कष्ट कम हो जायेगा। किन्तु श्री महाराज जी ने कहा- "**श्रीराम राजा** की आज्ञा नहीं है।" इस बात से जब रामराजा की चर्चा होने लगी तो पूज्य श्री महाराज जी के नेत्रों से आँसू बहने लगे। उनके रोम-रोम में विरह व्याप्त हो गया था। भक्तों में चिंता का वातावरण फैला था। कबीर ने कहा है-

दोहा- विरहिन ओदी लाकरी सपचे अरु धुँधियाय।
छूटि परे या विरह सों जो सिगरो जरि जाय॥
महाराज जी की दशा वैसी ही हो गयी थी।

## साकेत-वास

पंचत्व तनुरेतु भूतनिवहाः स्वांशैर्मिलन्तु स्फुट
धातारं प्रणिपत्य हन्त, शिरसा तत्रापि याचे वरम्
तद्वापीषु पय स्तदीयमुकुरे ज्योतिस्तदीयाग्ङन
व्योम्नि व्योम तदीयवर्त्मनिधरा तत्तालवृन्तेऽनिलः

-सूक्ति रत्नाकार

**अर्थ**–''मेरा शरीर भले ही नष्ट हो जाये, पंच भूत अपने–अपने अंशों में विलीन हो जाये, मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं, मैं तो सिर से प्रणाम कर विधाता से बस एक ही याचना करता हूँ कि मेरे शरीर का जल तत्व मेरे आराध्य की वाणी में जा मिले मेरे शरीर का अग्नि–तत्व ज्योति के रूप में मेरे हृदय सर्वस्व के दर्पण में लीन हो जाये, उनके आँगन के आकाश में मेरा आकाश तत्व और उनके पंखे में मेरा वायु तत्व समा जाये।''

पूज्य श्री चरणों ने सन् १९५८ में पहली मार्च को ओरछा में श्री रामराजा के सम्मुख व्रत साधा था। शरीर को अधिक संयत एवं संतुलित करने का संकल्प लिया था। सन् १९५९ पहली मार्च को उनका वह संकल्प पूरा हो गया। जिस दिन व्रत पूरा हुआ उसी दिन पूज्य श्री महाराज जी के मन में श्री रामराजा के दर्शनार्थ ओरछा पधारने की प्रेरणा हुई। उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की। छोटे महाराज जी उन्हें लेकर नूराबाद गुरु स्थान पर पधारे। साथ में बहुत से सन्त भी थे। छोटे महाराज जी ने सोचा–'यहां महाराज जी का स्वास्थ्य कुछ ठीक हो जाये तो ओरछा ले चलें।' नूराबाद पहुंचकर श्री बड़े महाराज जी ने श्री छोटे महाराज जी को अपने पास बुलाया और उन्हें समझाया एँरे रामदास ! भैया आजकल गाँवों के लोग तो बहुत गरीब हैं। तुम जो ओरछा में भण्डारा करोंगे उसका भार गरीब लोगों पर नहीं पड़ना चाहिए। लगभग एक लाख रुपये हाथ में हो तभी इतना बड़ा कार्य हाथ में लेना। छोटे महाराज जी ने आश्वासन दिया कि आपकी जैसी आज्ञा है वैसा किया जायेगा। उसी दिन बाबा लखनदास जी महाराज भी नूराबाद पधारे।

सन् १९५९, २ मार्च को महाराज जी का शरीर अचानक अधिक अस्वस्थ हो गया। सारे दिन वैद्य डाक्टर घेरे रहे। उन्होंने कोई दवा स्वीकार नहीं की, शाम के लगभग तीन बजे होंगे। उन्होंने भगवान्

का चरणामृत चाहा। चरणामृत दिया गया। अब सब सन्तों को विश्वास हो गया कि पूज्य बड़े महाराज जी शरीर छोड़ने वाले हैं। चारों ओर से रामध्वनि गूँजने लगी। श्री हनुमान जी के मंदिर में उन्हीं के सम्मुख अत्यन्त शांति से श्री राम नाम का स्पष्ट उच्चारण किया और उनकी अन्तरात्मा राम में लीन हो गयी।

**दो.– लिखा लिखी की है नहीं देखा देखी बात**
**दूल्हा दुलहिन मिल गये फीकी परी बरात।**

पूज्य महाराज जी के साकेतवास का समाचार बड़ी शीघ्रता से फैल गया। नूराबाद के नरसिंह–मंदिर में अपार जन–सागर उमड़ पड़ा। लोग अधीर होकर फूट–फूट कर रो पड़े। उन्हें लगा कि वे अनाथ हो गये–

**चौ.– सुनि विलाप दुखहू दुख लागा।**
**धीरज हू कर धीरज भागा।**

सायं चार बजे विमान सजाया गया। उसमें पूज्य महाराज जी का शरीर बैठी हुई मुद्रा में पधराया गया। उस समय मुखाकृति इतनी सजीव प्रतीत होती थी मानों महाराज जी कुछ बोलने ही वाले हैं। विशाल जन–समूह के साथ विमान को करह ले गये। मार्ग में करुण स्वरों से राम ध्वनि होती गयी। जनता रोदन नामोच्चरण के द्वारा ही प्रकट हो रहा था। सन्तों के लिये जो रोना होता है। उसमें भी राम नाम के ही स्वर फूटते हैं। गाँवों के बाल, वृद्ध, नर, दौड़–दौड़कर दर्शनार्थ आते जाते थे। स्थान–स्थान पर आरती होती गयी। लोग घी लेकर दौड़े इस दौड़ धूप में मनों घी मार्ग में लुढ़क गया। इस करुणा प्रवाह के साथ पूज्य चरणों का पार्थिक शरीर स्थान पर ले जाया गया।

स्थान पर चन्दन–काष्ठों से चिता रची गयी। रात्रि के ग्यारह बजे विधिवत् दाह–संस्कार किया गया। उस अंतिम 'लौ' के दर्शनों के हेतु

कई दिनों तक लोगों का ताँता लगा रहा– लोग वहाँ से इस प्रकार लौटे–'मनहुं सबनि सब संपत्ति हारी।' अस्थि चयन के पश्चात् एक–एक अस्थि एवं मुट्ठी–मुट्ठी भर भस्म को सहस्त्रों भक्तों ने भारत के समस्त तीर्थों में पहुँचाया। लोक–हृदय से अनेक लोक गीत फूटे। उनमें पूज्य चरणों के प्रति भव्य भावना प्रकट की गयी। उनके महाप्रयाण का सजीव चित्रण किया गया। पूज्य छोटे महाराज जी तो अधिक विकल हो गये। क्योंकि ये उनके केवल कृपा–पात्र ही नहीं, प्रेम पात्र भी थे। उनका अधिक व्यथित होना स्वाभाविक ही था–

उनके हृदय की विरह–वाणी में बड़ी व्यथा है वे कहते हैं–

उन्होंने अपने प्राण, प्राणपति को सौंप दिये। उनके लिये यह मृत्यु नहीं, मृत्यु की मृत्यु थी। वास्तव में ''महापुरुष की मृत्यु दिव्य है। वह अनन्त के दर्शनों का द्वार है उसमें कितनी शांति है, कितना समाधान।''

सुकरात मरते समय अमृत–तत्व का स्वाद ले रहा था। मरते समय 'गेटे' न कहा– 'अधिक प्रकाश, अधिक प्रकाश'। तुकाराम महाराज ने, रामकृष्ण हरि गाते गाते ही देह का त्याग किया। 'समर्थ' ने कहा था–'रोते क्यों हो मेरा दास बोध तो है।' लोकमान्य तिलक यदा यदाहि–'धर्मस्य' वाला श्लोक बोलते–बोलते चले गये। गांधी जी दोनों हाथ जोड़े हुए 'हे राम' कहके संसार से विदा हुए। संसार में इस प्रकार के कितने ही महा प्रस्थान हो गये होंगे। मृत्यु मानों महा शांति है, मृत्यु मानों नवजीवन का आरंभ है, मृत्यु मानों आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानों पर्व है। वह आत्मा एवं परमात्मा की एकता का संगीत है, मरण मानों प्रियतम के पास जाता है। भारतीय संस्कृति ने मृत्यु का डंक काट कर फैंक दिया है, उसे सुन्दर और मधुर बना दिया है। अतः महापुरुषों के लिए मृत्यु मानों खेल है, मृत्यु मानों आनन्द है, मृत्यु मानों मेवा मिठाई है, मृत्यु मानों पुराने वस्त्र निकालना है और मरण मानों चिर विवाह है साने गुरु।

पर यह तो उनके लिए है जो अपने आराध्य से जा मिले। पूज्य श्री महाराज ने पार्थिक शरीर के बन्धन तोड़ दिये। वे श्री रघुनाथ जी के चरणों में पहुँच गये। पर उन पर तो वज्र टूट पड़ा जो उनके भक्त हैं और जो उनके अनुयायी हैं। उनकी आँखें तो इसीलिए तड़प उठीं कि उन्हें दिव्य स्नेह-जल से नहलाने वाले, रोम-रोम को पुलकित कर देने वाले युगल लोचन सदा के लिए बन्द हो गये। उनके कान तो इसी से पीड़ित हो गये कि पूज्य चरणों के अपार-रस-पूर्ण स्वर्गीय बोल अब सदा के लिए मौन हो गये।

छप्पय :-

जिनके सुखमय मृदुल वचन को श्रवण तरसते,
जिनके दर्शन काज नयन नित अश्रु बरसते।
जिनके पद को गहन हाथ दिन-रात भटकते,
मिलत नहीं हैं, यही भगतजन सीस पटकते।
मरे नहीं वे हैं अमर, सत चित आनन्द कन्द हैं,
हमें अभागी जानकर दर्शन देना बन्द हैं।

(२)

कलि से व्याकुल जीव शरण में जिनकी आते,
जगत जाल में फँसे दुःखी छुटकारा पाते।
जिनके कर की छाँय सदा त्रयताप नसायो,
अरे देव दुर्देव ! कहां वह रूप छिपायो।
छली प्रपंची अधम लखि दृग से ओझिल है गये,
श्रीराम राजा के प्राण में प्राण धरोहर धर गये।

(३)

अन्न दान नित देत नहीं कोउ भूखे जावें।
स्वयं कष्ट सहि लेंय वस्त्र दे शीत मिटावें,

क्षमा, शील, सन्तो, ज्ञानहू दान दियो है।
कुटिल जननि को नाम-दान दे भक्त कियो है।
सदा दियो सुख सवन को दुःख देवों बाकी रह्यो,
सो अब देकर छिप गये हाय राम ! यह का भयो।

(४)

दीननि को लखि दुःखी फटत थी जिनकी छाती,
रोवत देखें जीव आँख आसू भर लाती।
बड़े-बड़े दुःख सहे दुःख काहू नहिं दीनो,
सदा दुखित सो नेह यही व्रत जिनने लीनो।
चिन्ता है गुरुदेव ! यह कैसे तुम सुख सोइहौ,
हमें दुःख में देखिके तुमहूँ दुःख में होइ हौ॥

स्थान पर साधु समाज अन्यत्र गृहस्थगण भी 'बड़े' महाराज जी 'छोटे' महाराज जी इन दो नामों से पूज्य परम गुरुदेव एवं उनके आज्ञाकारी कार्यशील प्रिय शिष्य को क्रम से पुकारा करता है। इस बात को लक्ष्य करते हुए झांसी के भक्त कवि भवानीप्रसाद 'मुदगिल' ने पूज्य महाराज जी के शरीर-संवरण को 'छोटे' 'बड़े' भेद को मिटाकर अद्वैत भावना- एकाकारक का संकेत माना है। उन्होंने कहा-

कवित्त-

लेली समाधि कुछ लोग यह कहते हैं,
कोई-कोई कहते महानिद्रमांहि सो गये।
छोड़ा शरीर कहें कोई देहान्त हुआ,
कोई-कोई भक्त कहे राम-धाम को गये।
शोकाकुल कोई कहें हमसे हैं विलग हुए,

**मेरे महाराज हाय मुझसे आज खो गये।**
**'मुदगिल' कहते लोग कहते थे 'छोटे-बड़े'**
**भेद को मिटाने मिलि दो-से-एक हो गये।**

कई नगरों में एवं सन्त स्थानों में महाराज जी के 'साकेतवास' का समाचार गया। 'रऊ चम्बल का घाट' नामक स्थान के वैष्णव सन्त श्री लछिमनदास जी ने जैसे ही सुना वैसे ही–हा 'महाराज जी' कहके प्राण छोड़ दिये। इसी प्रकार आगरा के कैलाशचन्द्र भक्त ने भी जिस दिन और जिस समय यह वृत्तान्त सुना वे उसी क्षण जैसे बैठे वैसे देखते रह गये जबकि तीसरे दिन उनके लड़के की शादी थी। समाचार देने वाले के मन में यह कल्पना भी न थी कि उनके मुँह से जैसे ही दारुण वृत्तान्त निकलेगा उसी क्षण इनके प्राण निकल जायेंगे। ये दोनों घटनायें अद्‌भुत थीं सच्चे प्रेम का अद्वितीय उदाहरण था।

जिस दिन पूज्य श्री महाराज जी का शरीर शान्त हुआ उसी दिन से 'करह' स्थान पर एक साल के लिए अखण्ड राम–नाम का कीर्तन शुरू किया गया। विशाल भण्डारा हुआ। जीवन–चरित्र प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया गया जो कि आपके हाथ में है। श्री छोटे महाराज जी ने उनकी स्मृति में श्रद्धा के अनुरूप एक भव्य समाधि मंदिर के निर्माण का निश्चय किया। उस निश्चय की कार्य रूप में परिणति भी दर्शनीय है।

इन सारे प्रयत्नों का एक मात्र उद्देश्य यही है कि अधिक–से–अधिक समय तक उनकी पवित्र स्मृति सजीव बनी रहे और आज का मोहाकुल प्राणी उससे अपना अन्तः पवित्र बनाकर शांति प्राप्त कर सके। क्योंकि सन्तों का चरित्र प्रभु–मिलन की मधुर कथा है और उनका स्मारक प्रभु का सच्चा स्मारक है। वेद तो शब्द रूप हैं। उसमें भी 'नेति' शब्द तो और भी चक्कर में डालने वाले हैं। इसी को लक्ष्य

करके 'अमृतोदय' नाटक के रचियता ने एक बात बड़ी मर्म की कहीं है। वह कहता है–

**श्रुति-जनक ! रटत्य सौ कुमारी**
**तव दुहिता बहितां बहिरेत्य 'नेति नेति'**
**व्यवहित निकटस्थि तोऽसि यस्माद्**
**त्वयि मिलितेऽपि ममातिथे: क्क भोग: ?**

अर्थ–'हे श्रुति जनक श्रुति के पिता। यद्यपि मैं आपके पास ही आपके बिलकुल द्वार पर ही आ गया हूँ फिर भी आप छिपकर जा बैठे हैं और आपकी पुत्री श्रुति, बाहर आकर कहती है– 'नेति–नेति' नहीं है, नहीं है।' इससे मैं समझता हूँ कि तुम्हारे मिलने पर भी मुझ अतिथि को भोग–सामग्री का मिलना दुर्लभ ही है। जो पहले से न मिलने का इतना प्रबन्ध रचाए बैठा है उससे उदारता की क्या आशा ?

किन्तु सन्त तो श्रुति प्रतिपादित प्रभु की महिमा को, उसकी झलक को अपने चरित्रों में प्रदान कर देते हैं। जिनसे अगाध विश्वास का निर्माण होता है। जीवन में विश्वास की अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि–

**दो.– विनु विस्वास भगति नहिं तेहि विनु–द्रवहि न राम**
**राम कृपा विन सपनेहु मन कि लहे विश्राम।**

# अमृतकण

## पूज्य परम गुरुदेव के अनमोल बोल

नाम–महिमा

**रामायण, माला है, रामनाम उसमें सुमेरु है**
**रामायणराम रूप है किन्तु वह रूप नाम के आधीन है**

– देखियत रूप नाम आधीना

# साधु का धर्म सेवा है

स्थानीय साधु धर्मदास को समझाते हुए एक बार कहा था– 'झोंपड़ा बनाने में लकड़ी, रस्सी, पत्ते, सींके आदि कई वस्तुएं लगती हैं। जब वह बनकर तैयार होता है तब उसका नाम 'झोंपड़ा' होता है। फिर उसे कोई ''रस्सी' या 'लकड़ी' आदि के नाम से नहीं पुकारता। इसी प्रकार सांसारिक नाम, रूप, जाति आदि के योग से साधु बनता है। मनुष्य जब साधु बन जाता है। तब उसकी अन्य बातें गौण हो जाती हैं। साधु का अर्थ है– सेवक। और सेवक का अपना धर्म है सेवा।

## पूर्ण ज्ञान या पूर्ण भक्त में भय नहीं।

धनेले के सत्संगी भक्त श्री रामप्रसाद जी ने एक बार पूछा– महाराज जी ! मुझे मनुष्य से डर नहीं लगता। फिर चाहे वह मेरा शत्रु हो या डाकू और चाहे वह नंगी तलवार लेकर सामने ही क्यों न आ जाये। किन्तु सर्प और सिंह को देखकर मैं अत्यन्त भयभीत हो जाता हूँ। न जाने यह क्या बात हैं ?

महाराज जी ने उत्तर दिया–'भैया, भय तो तब दूर होगा जब सब प्राणियों से या तो प्रेम करने लगो या फिर यह समझ लो कि ये सब श्रीराम के रूप हैं। पूर्ण ज्ञान अथवा पूर्ण भक्ति में भय नहीं होता वैसे तो श्री जानकी मैया का पता लगाने के लिये बहुत से वानर गये थे। तन–मन से श्रीराम–काज में लगे थे वे'। किन्तु भय उनमें लगा था–

**डरपे गीध वचन सुनिकाना**

एक हनुमान जी नहीं डरे क्योंकि वे पूर्ण भक्त थे, वे निर्भय थे–

**सैल विसाल देख इक आगे**
**तापर कूदि चढ़े भय त्यागे**

# भगवत्कृपा के पात्र

सिड़ी पागलों के द्वारा कभी–कभी ऐसी सटीक भविष्यवाणी होती कि आश्चर्य होता था। छोटे महाराज जी ने एक बार पूछा– महाराज जी पागलों के मुँह से भगवान की वाणी कैसे प्रकट होती है ? वे इस कृपा के पात्र कैसे बन जाते हैं ?

महाराज जी ने कहा– 'भैया, भगवान की कृपा तो सीधे–सादे लोगों पर होती है चतुरों पर नहीं। क्योंकि भगवत्कृपा से सरल हृदय में उतरा हुआ चमत्कार लोक–मंगल करता है किन्तु चतुर–चित्त का चमत्कार लोक में अमंगल करता है। सरल हृदय की वस्तु 'पर' के लिये होती है किन्तु चतुर हृदय की चीज 'स्व' के लिए होती है।'

ध्येय 'नाम' है।

रूप साक्षात्कार के पश्चात् नाम का साक्षात्कार होता है। रूप रहस्य ज्ञान होने पर नाम का रहस्य खुलता है।

# आवश्यक साधना

साधक को प्रतिदिन शरीर से सेवा–कार्य करना चाहिए। क्योंकि दैनिक शारीरिक श्रम शरीर का शोधक होता है। इसके अतिरिक्त छः सहस्त्र षड़क्षर मंत्र का जप एवं पच्चीस सहस्त्र सीताराम–नाम का जप तथा कम से कम 'रामचरित–मानस' का मासिक पाठ अवश्य करना चाहिए। इससे शरीर वाणी निर्मल होंगे। इनसे मन निर्मल होगा और तब श्रीराम जी के सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त होगा प्रभु का कथन है–

**–निर्मल मन जन सो मोहि पावा**

# दुर्लभ सन्त

**दो.– ज्ञानी चतुरा बहु मिले पंडित मिले अनेक,**
**रामरता इन्द्रिय जिता कोटिन में कोउ एक।**

# मूलचरित्र

(१)

**मध्य प्रान्तगते जरारपुरा के मार्गे सिते पंचमी**
**तिथ्यो नागभुगाड भूपरिमिते श्री वैक्रमे वत्सरे**
**कारुण्याब्धिखातरद् गुरुवरः श्री रत्नदासः पुरा,**
**त्यक्त्वा विंशतिवर्ष-सम्मितव या गेह गतः काननम्।**

**अर्थ**–'मध्य प्रदेश के अन्तर्गत 'जरारे' नामक गाँव में विक्रम संवत् १९४८ अगहन सुदी पंचमी के दिन करुणा सागर गुरुदेव भगवान् श्री रामरतनदास जी महाराज अवतीर्ण हुए। बीस वर्ष की अवस्था में घर छोड़कर वन में चले गये।'

(२)

**सद्यः प्राप्य करेह नामक वनं व्याघ्रादिसंसेवितम्**
**प्रान्ते ग्वालियराभिधानविदिते बद्धासनः प्रस्तरे,**
**तत्र श्री रघुनाथ नामसरसे रन्तस्सुधानिर्झरै**
**र्निर्धौतानकरोच्च वैरमलिनान् क्रूरान् पशून् कानने।**

**अर्थ**–''शीघ्र ही ग्वालियर प्रान्त के अन्तर्गत व्याघ्रादि हिंस्र पशुओं से युक्त 'करह' नामक वन में पहुँचे और एक प्रस्तर के आसन पर आसीन होकर तपोरत हो गये तथा उन्होंने श्रीराम–नाम से सरस अपने हृदय के सुधा– मधुर रूपी झरनों से वैर–मलिन क्रूर वन्य पशुओं को भी निर्मल कर दिया।''

(३)

**कृत्वा पिद्धिसहोदरैः सुचरितैर्विस्मयरस्सान् मानुषान्**
**दत्वा स्फीतयशो विशिष्टमहसा लोकाय यः शुभ्रताम्**
**सोऽयं वाणं-वसुन्धरा-नखमिते संवत्सरे वैक्रमे**
**मासे फाल्गुनिकेऽष्टमीतिथियुते सोमे स्वरूप गतः।**

**अर्थ**–''अपने सिद्धि–सम्पन्न अद्भुत चरित्रों के द्वारा लोगों को आश्चर्य चकित कर तथा विस्तृत विशिष्ट यश की शांति से लोक को उज्वलता प्रदान करके वि. सम्वत् २०१५ फाल्गुन कृष्ण अष्टमी सोमवार के दिन पूज्य चरण अपने स्वरूप में लीन हो गये।''

(४)

**तच्छिष्यौ विदितौ तु रामलषनः श्रीरामदासस्तथ्**
**यस्यान्त्येष्टिविधावसंख्यजनता सौख्यं महदन्वभूत्।**
**वर्षव्यापि प्रचालितं श्रीहरेः पापापहं कीर्तनम्**
**स्थानच्चापि समाधिसूचनकरं निर्मापितं सत्वरम्।**

अर्थ– ''उनके दो प्रमुख शिष्य हैं श्री १०८ श्री रामलखनदास जी एवं श्री १०८ श्री बाबा रामदास जी महाराज। जिनके भण्डारे में अपार जनसमूह ने अपार आनन्द प्राप्त किया। एक साल का अखण्ड हरिनाम–कीर्तन का आरंभ किया गया तथा पूज्य परम गुरुदेव के समाधि–मंदिर का निर्माण कराया गया।''

(५)

**एवं यल्ललितं गुरोः सुचरितं श्रीरामदासादितम्**
**चित्रं सर्वजनानरञ्जनकरं तद्रामशास्त्रयार्ङ्गितम्**
**पादाम्भोज–नतिं विधाय विधिवद् भक्त्याभिरामोभृतः**
**शश्वत्प्रार्थयते हरिं सुचरितं भूयान् मुदे जन्मिनान्**

अर्थ–''इस प्रकार श्री गुरुदेव का ललित चरित्र, जिसे पूज्य बाबा श्रीरामदास जी महाराज ने बताया और श्री रामशास्त्री ने उस विचित्र चरित्र को रोचक शैली में विस्तृत रूप से अंकित किया, पूज्य परम गुरुदेव के चरण कमलों में नत मस्तक होकर भक्ति–भाव से सम्पन्न यह अभिराम दास निरंतर प्रभु से प्रार्थना करता है कि वह शुभ चरित्र प्राणियों को आनन्द प्रदान करें।''

रचयिता– **श्री अभिरामदास जी वेदान्ताचार्य, वाराणसी**

# करह-आश्रम की गुरु-परम्परा

**सीता नाथ समारम्भा रामानन्दार्य मध्यमाम्**
**अष्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु-परम्पराम्।**

सर्वेश्वर भगवान् श्रीराम जी
जगज्जननी श्री जानकी जी
नित्यपार्षद श्री हनुमान जी
श्री ब्रह्मा जी
श्री वसिष्ठ जी
श्री पराशर जी
श्री वेदव्यास जी ब्रह्म सूत्रकार
श्री शुकदेव जी
श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी–बोधायन–वृत्तिकार
जगद गुरु श्री गंगाधराचार्य जी
श्री सदानन्दाचार्य जी
श्री रामेश्वरानन्दाचार्य जी
श्री द्वारानन्दाचार्य जी
श्री देवानन्दाचार्य जी
श्री श्यामानन्दाचार्य जी
श्री श्रुतानन्दाचार्य जी
श्री चिदानन्दाचार्य जी
श्री पूर्णानन्दाचार्य जी
श्री श्रियानन्दाचार्य जी
श्री हर्यानन्दाचार्य जी
श्री राघवानन्दाचार्य जी–श्रीमठ–काशी।
श्री यतिराज रामानन्दचार्य जी–आनन्द भाष्यकार

श्री अनन्तानन्दाचार्य जी

श्री कृष्णदास जी पयहारी–गलता–गद्दी–जयपुर

श्री अग्रदास जी, रैवासा, गद्दी–मारवाड़

श्री नारायणदास जी–(श्री नाभा जी महाराज)

श्री श्यामदास जी

श्री प्रेमदास जी

श्री प्रहलाददास जी

श्री रघुनाथदास जी

श्री भगवानदास जी

श्री मस्तरामदास जी–बहादुर गंज, उज्जैन–मस्तराम अखाड़ा

श्री आशाराम दास जी–गुल्लर छत्तासिंह पौर–जगदीशपुरी

श्री प्रेमदास जी–गुल्लर छोटा छत्ता–जगदीशपुरी

श्री भगवानदास जी–परमहंस–गोपाल घाट–गोकुल।

श्री सीतारामदास जी (श्री तपसी जी महाराज)

स्थान–नूराबाद, श्री हनुमान गढ़ी।

श्री रामरतन दास जी महाराज स्थान 'करह'

(१) गुरु कहें सो कीजिये गुरु करे सो नांहिं
गुरु ब्रह्म तुम जीव हो है शास्त्रन के मांहि
है शास्त्रन के मांहि गुरु की करना सेवा
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गुरु देवन के देवा
रामदास गुरु शरण गहि भवसागर तरि जांहि
गुरु कहें सो कीजिये गुरु करें सो नांहि

❖❖❖

(२) चरण पादुका की शरण, नमन करूं दिन रात
दरस परस अरू ध्यान से सकल विघ्न मिट जात
सकल विघ्न मिट जात तिमिर उरको लखि नासत
कृपा मूर्ति गुरु कृपा सदा पटिया पर राजत
रामदास से दीन की, दयामयी है मात
चरण पादुका की सरण नमन करूं दिन रात

❖❖❖

(३) हम वासी वा देश के जिसे कहत साकेत
जिसे कहत साकेत श्रुति जाके गुन गावे
शम्भु शारदा शेष महत्व कहि अंत न पावे
सत्य धाम बैकुंठ वहिश्त से परे विराजे
राम धाम सत चित्त नित्य धामन सिर ताजे
हंसन की कहा चली परम हंसहु ललचावें
बिना कृपा श्री राम स्वप्न में दर्शन पावें
त्रिगुण त्रिवेद त्रिदेव काल की गति जहं नाहीं
दिव्य किशोर स्वरूप भक्त सुख सिंधु समाही
नाम रूप गुण भेद जहाँ कतहूँ नहिं दरसे
होई अन्भेद पुनि भेद भाव से सुख में सरसे
रामदास पहुँचे वही काहू सों नहिं हेत
हम वासी वा देश के जिसे कहत साकेत

(४) पटिया पर आसन कियो श्री गुरु वर्ष पचास
जाको चरणमृत पियें होइ पाप का नास
होइ पाप का नास भजन की महिमा भारी
जड़ से होइ चेतन्य हरत जन पीड़ा सारी
रामदास पर करि कृपा पटिया तेरी आस
पटिया पर आसन कियो श्री गुरु वर्ष पचास

❖❖❖

(५) पटिया है मंगल करनि कल्प वृक्ष एहि काल
काम धेनु प्रयत्क्ष हैं दया करत तत्काल
दया करत तत्काल धोय चरणा मृत ली जे
श्री सिद्ध बाबा की प्रेम सहित परिक्रमा कीजे
रामदास ते धन्य राम के नाम के रटिया
दीनन को दुःख हरन श्री गुरु देव की पटिया

❖❖❖

(६) घर को परसेया अहे और अंधेरी रात
और अंधेरी रात जन्म मानुष को पायो
भरत खण्ड शुचि भूमि ब्रह्म जहाँ विचरनआयो
गंगा जमुना निकट धाम दर्शन के काजे
संतन को करि संग राम गुण सुनि अघ भाजे
रामदास गुरु कृपा से भली बनी है बात
घर को परसेया अहे और अंधेरी रात

❖❖❖

(७) पटिया पर गुरु देव ने, किय निरंतर जाप
जाके दर्शन मात्र से, मिटत पाप संताप

मिटत पाप संताप तख्त पर दादा गुरु बैठे
गोकुल से नूराबाद, दर्श दे जन दुःख मेटे
श्री लखनदास गुरु भाई जेष्ठ विराजत निशि दिन खटिया
रामदास, कर दर्श तख्त, खटिया और पटिया

❖❖❖

(८) बिनु करुणा गुरुदेव मिटे नहिं खटपट मनकी
अटपट जग का जाल चाल भई लटपट तन की
झटपट दर्शन करहु सिद्ध स्थल में आके
चटपट होय प्रकाश ध्यान गुरु का उर ताके
रामदास, विश्वास गहि गुरु चरणनि में जो लगें
सिद्ध भूमि पटिया निरखि चरणामृत लो अध भगें

❖❖❖

(९) मंगलमय गुरुनाम जपत रसना मंगलमय
मंगल गुरु चरित्र श्रवणमन दोऊ मंगलमय
मंगलमय गुरु मूर्ति निरखि दोउ द्रग मंगलमय
मंगलमय सतसंग जहां श्रोता वक्ता मंगलमय
रामदास मंगल सदा करह धाम में पग धरो
मंगलमय पटिया निरखि मंगलमय जीवन करो

❖❖❖

(१०) श्री गुरुदेव दयालु दयाकरि दीनन देखो
पाप ताप संताप दुःख दुखिया के पेखो
है भव सिन्धु अपार शास्त्र श्रुति संत वखानो
बिनु करुणा गुरु देव कहुँ नहिं ठोर ठिकानो
गुरु पुनोसिय-पिय मिलन अष्टमी मंगल दायिका
रामदास दुइ पर्व पेशिष्यन सदा सहायका

श्री सीताराम जी

(१) पर्वतीय वन्य भूमि–करह जैसो सिद्ध स्थल,
जहाँ सिद्ध बाबा जू की लगी सिद्धि हटिया।
सिद्ध तपसी जी गुरुदेव नूराबाद वाले,
सिद्ध बाबा लखन दास सिद्ध उनकी खटिया।
आय के विराजे जहाँ बाबा रामरतन दास,
भये परम सिद्ध सीताराम नाम रटिया।
सिद्ध लंक लूहरी बनाये बण्डा भगत सिद्ध,
सिद्ध भई बाबा जू की पत्थर की पटिया

❖❖❖

(२) पटिया वारे बाबा आश्रम वन्यो वन्द्रावन मांहि,
दावानल कुण्ड उड़िया बाबा के निकटिया।
कर्त्ता–कारयिता सिद्धं सन्त बाबा रामदास,
वाणी जिसकी हिये में उपजावे चटपटिया।
पोषत सभी को कृपा दृष्टि से निहाल करत,
चाहें हो विनीत सरल चाहे खटपटिया।
जिनकी कृपा के चिर ऋणी दास 'नारायण'
बढ़िया बनाय के पुजवाबें मोसे घटिया।

श्री नारायणदास बक्सर

## 'पशुयोनि में सन्त'

पशु बने पशु संग रहे सुनी पशुन की बात।
पशु मति मेरी देख के काहे नाथ घिनात॥

प्रारब्ध वशात् कुत्ता योनि में करह–स्थान पर भूरी नाम की कुतियां, रंग भी भूरा, हृदय भी भूरा, निर्मल हृदय, कभी–कभी परमात्मा, श्री भगवान प्रेमधन देकर जगत में भेजते हैं, पर उसका उपयोग कोई–कोई कर पाते हैं पर भक्ति भावना भूरी माता ने प्रत्यक्ष करके बता दिया–

**दौलत मिली है इश्क की अब और क्या मिले,**
**वो चीज मिल गई है जिससे खुदा मिले।**

कुत्ता और बिल्ली का स्वाभाविक बैर होता है, पर गुरुदेव की लीला का यह प्रत्यक्ष अनुभव देखने को मिला आपस में लोट–पोट होना एक के बिना एक को चैन नहीं साथ–साथ रोटी खाना छुनिया उसका तब भी दूध पीती है जब उसके स्तनों में दूध नहीं होता है। यह बाबा के दरबार के ऊपर रहती थी, शरीरान्त होने से दो दिन पहले दरवाजे पर ही पड़ी रही नश्वर जगत को छोड़कर भगवत धाम को पधार गई। महाराज जी ने उसकी पक्की समाधि परिक्रमा मार्ग में बनायी है।

**इश्क करना ही अगर बन्दे तुझे मंजूर है।**
**तो इश्क कर उस नूर जिस नूर का तू नूर है॥**
**भूरी कुतिया पशु ने दिया प्रेम सन्देश**
**सहज बैर विसराय के रहती साथ हमेश**
**जाति की बिल्ली छुनिया**
**पीवत मेरो दूध प्रेम देखे सब दुनिया**
**रामदास बिनु प्रेम जगत में भगति अधूरी**
**नश्वर जगत को त्यागि प्रेम सिखला गई भूरी।**

श्री सीताराम जी

# श्री श्री १००८ श्री श्री परमहंस जी ( श्री भगवानदास जी महाराज ) का जीवन चरित

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा। पापं तापं तथा दैन्यं हरते सन्त समागमः। संपर्क में पहुंचने पर गंगाजी पापों को दूर करती हैं। चन्द्रमा सबका ताप संताप दूर कर शीतलता देते हैं। कल्पवृक्ष दीनता दूर करता है, किन्त संत चरित्र तीनों से ऊपर है– क्योंकि एक संत इन तीनों पाप, संताप और दैन्य को दूर करते हैं।

प्रत्यक्ष रूप से ऐसे विरले संत देश काल की सीमा इतिहास पुराण की सीमा से ऊपर उठकर सत् चित् आनंद से मिलने–मिलाने की प्रेरणा प्रदान करने वाले ऐसे सूर्य हैं जिन्हें उदय अस्त का कोई व्यवधान नहीं, सदा सर्वथा एक रूप रहते हैं। सिद्ध तपोभूमि करह मूल्य उत्स ऐसे ही वन्दनीय संत श्री परमहंस जी जिनका नाम था श्री भगवान दास जी। हमारे पूज्य परमहंस भी बाल अवस्था से ही श्री जगन्नाथपुरी पहुंचे यहाँ एक दीर्घ आयु वाले संत श्री प्रेमदास जी के शरणापन्न हुए, विद्याध्ययन किया। योग निष्ठा प्रारंभ से थी, अभ्यास किया योगी राज बने। घंटों तक प्राणायाम चढ़ा जाते। श्री गुरुदेव की कृपा से योग में इतने निष्णात सिद्ध हुए कि काया खण्ड की विद्या प्राप्त की। शरीर के हर अंग को अलग डाल लेना फिर जितने समय का संकल्प लिया हो उतने समय पर पुनः उसी अवस्था में ज्यों–का–ज्यों हो जाना उनके सहज बात थी। श्री गुरुदेव से आज्ञा पाकर ब्रज में भजन करने को गोकुल पधारे संतों में कहावत है– 'हजूर या दूर'

श्री गुरुदेव के पास रहने का संयोग हो तो सेवा में हाजिर रहो और भजन करना हो तो दूर जाकर भजन करो, गोकुल में जाकर वहाँ रहकर भजन किया परन्तु जब उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी तो जिनका

आधिपत्य पहले से था तो उन्होंने कहा हमारी जगह खाली करो यहां नहीं रहने देंगे। कमण्डल उठाकर यमुना जी के किनारे (जहां गोपाल घाट आज स्थित है) आकर श्री यमुना जी से प्रार्थना की–

**श्याम प्रिया पटरानी कालिन्दी मातेश्वरी।**
**जाके एक–एक बिन्दु पर निछावर गोविन्द होत॥**

प्रार्थना की। आप जगह दें तो गोकुल वास करुं। श्री यमुना जी प्रार्थना सुनकर कुछ दूर हट गईं और सुन्दर आश्रम निकल आया उसी स्थान पर गोपाल घाट आश्रम बना। श्री गोपाल जी की प्रतिष्ठा हुई जो अब गोपाल घाट के नाम

**भजन करों पाताल में प्रकट होत आकाश।**
**दावे दूवे ना दवे कस्तूरी की बास॥**

इनके भजन प्रताप से भारत वर्ष के बड़े–बड़े नगर बम्बई इत्यादि से बड़े–बड़े सेठ आकर सेवा करने लगे गोकुल का एक सेठ सवा मन आटा साधु सेवा को नित्य देता था। सन्त सेवा से महिमा बढ़ी हजारों रुपयों के मनीआर्डर भक्तों के द्वारा आने लगे गोपाल घाट के पश्चात् श्री विजयी हनुमान का मंदिर बना। उसके बाद गौशाला का निर्माण हुआ। सौ से अधिक गाएँ नित्य रहती थीं। श्री परमहंस जी का भाव था यह गोकुल गायों का कुल है इसलिए गौ सेवा में अधिक निष्ठा थी गोपाल घाट से सायं काल नित्य गौ दर्शन करने आते थे। एक बार लौटते समय आसुरी स्वभाव वालों ने बहुत मारा तो प्राणायाम चढ़ाकर शरीर मृतक बना लिया।

**महिमा भृंगी कौन सुकृती की खल बच विसिखन वाची॥**

महापुरुषों की महिमा रुपी हिरनी दुष्टों के वचन बाण से बची नहीं सन्तों को परमहंस जी के बारे में पता चला उठाकर गोपाल घाट लायें सेवा की सात दिन बाद प्राण ब्रह्मांड से उतार कर बैठे हो गए।

पूज्य परमहंस स्वामी भगवानदास जी

संत सेवा में आपकी बड़ी निष्ठा थी सो, मूर्तियों का भोजन नित्य अकेले ही बनाते थे किवाड़ अंदर से बंदकर देते थे। मंगला आरती में गरुड़ घटी नहीं बजाते थे, कोई साधु अंदर न आ जाये। एक खरखण्डा दाल एक खरखण्डा चावल आगे दो चूल्हे बराबर में थे। पीछे भट्टी पर चढ़ा देते थे गर्दन पर लोहे का कढ़ा था जिसमें ऊपर घिर्री लगी रहती थी दोनों में जंजीर बंधी हुई थी ऊपर जंजीर खीचीं हाथ का इशारा किया दोनों पात्र अपनी–अपनी जगह आ जाते थे बाद में लंगर पर फुलका बनाते। दो फुलका एक डंका दाल, एक डंका चावल सब पंगत इतने में ही तृप्त हो जाती थी यह उनके हाथ की सिद्धि थी। यही नित्य नियम क्रम था। हर खाने वाला उतने में ही तृप्त हो जाता था। प्रसाद बनाकर ही किवाड़ खोलते और पंगत की सीताराम बोलते। सभी संत प्रसाद पाकर यमुना जी में पात्र शुद्धि करते थे। कभी चेले कहते थे महाराज जी साधु लोग अमनीया में नहीं आते। तो श्री परमहंस जी समझाते– प्रसाद पाने में तो आ जाते है यदि प्रसाद पाने में भी न आयें तो वहीं प्रसाद लेके पवाना पड़ेगा। यही उनकी बड़ी कृपा है जो प्रसाद में आ जाते है।

श्री परमहंस जी के शिष्य तो बहुत थे परन्तु श्रीसियाराम दास जी व श्री सीताराम दास जी दो मुख्य थे। श्री राम–लक्ष्मण जानकी जी की प्रतिष्ठा श्री सीताराम दास जी ने जाकर की। प्रायः लोगों के चलन में भी कालान्तर में मधुर होने पर भी व्यवहार में कटुता आ जाती है ऐसे ही किसी कारणवश बड़े गुरुभाई की वजह से श्री सीताराम दास जी नूराबाद चले गये। बाद में श्री सीताराम जी का अधिक परिचय नहीं मिल सका श्री सीताराम दास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला आगरा में सैंया के पास इरादत नगर में ब्राह्मण परिवार में सम्वत् १८६० में हुआ जो अदालत नगर भी कहलाता है। इनका विवाह १८७८ में हुआ प्रथम मिलन की रात्री में स्त्री का प्राणांत हो गया तीव्र

वैराग्य हुआ सब कुछ छोड़कर गोकुल आ गये श्री परमहंस जी के शरणापन्न हुए उस समय श्री परमहंस जी की आयु १२८ वर्ष की थी उनका जन्म सम्वत् १७५० में हुआ था श्री सियाराम दास जी की तीर्थ यात्रा पर कहां शरीर छूटा, पता नहीं लगा। इसीलिए गोपाल घाट पर इनकी चरण पादुका न पड़ सकी इनके शिष्य श्री जगन्नाथ दास जी हुए। श्री परमहंस जी की सर्वत्र प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा से मिलने के बहाने इन्हें चार लोग मारने को आ गए किन्तु किसी को वहां परमहंस जी नहीं दिखे देखा यह कि कहीं सिर कहीं हाथ कहीं पैरा सब अलग–अलग देखकर घबराकर भाग गये।

आजकल भी स्वार्थी लोग सन्तों से मिलने को आते हैं लेकिन सन्तों में मिलने को नहीं। संतों में मिलने को कोई विरला ही आता है उनकी महिमा सुन कर एक उच्च पदाधिकारी (अंगेज–जो तरक्की चाहता था) आया और एक जवाहरात की माला भेंट चढ़ाकर हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ। आप स्नान कर यमुना के किनारे भजन कर रहे थे माला उठाकर यमुना में फेंक दी। उसने बहुत बिगड़कर कहा इतनी कीमती माला आपने फेंक दी। जब आप ने यमुना जी से कहा माँ माला लौटा दो यमुना जी से एक हाथ निकला जिसमें बहुत सी मालायें थीं। परमहंस जी ने एक लेकर दी और बोले ले जा अपनी माला। बाद में संकोच से माला चरणों में चढ़ा कर वह चला गया बाद में उनकी कृपा से और अधिक उच्चतम पद उसको मिला।

एक मथुरा दास जी नाम के चाकरिया श्री महाराज जी के साधक चेला सेवा में रहे। श्री वृन्दावन धाम की बैठक में महन्त जगन्नाथ दास जी उड़ीया खालसा के साथ ठहरे थे श्री मथुरा दास जी ने गोकुल से आकर देखा उनकी जमात में १५,००० संत तीन दिन से भूखे हैं। पहले दिन मालपुआ खीर, दूसरे दिन पूड़ी लड्डू साग, तीसरे दिन फुलका चावल कढ़ी और साग, पर उनमें एक अघोरी नित्य कीड़े

पैदा कर दे। तब उसे यमुना जी में बहा दें तो मथुरादास जी ने देखा की तीन दिन से संत प्रसाद में कीड़े पड़ जाते हैं पता नहीं क्या कारण है। परमहंस जी ने कहा कि चोर पकड़ा नहीं जाकर कह दो सन्त इधर आ जायें। इधर मनों दाल, मनों चावल, मनों आटे के फुलकें तैयार कराये सुबह संत आ गए यमुना जी स्नान किया सबकों हाथ पर ही दो फुलका एक डंका चावल का एक डंका दाल दी तीन दिन के भूखे संत इतने से ही तृप्त हो गये। यह उनकी सिद्धि का प्रमाण एवं परिचत है।

अनन्तर श्री परमहंस जी ने सब बारह भाई डांडीया चारों सम्प्रदाय तीनों अनी निर्वाण दिगम्बर निर्मोही इकट्ठे हुए पूछा चोर नहीं पकड़ा साधु भूखे मरे सबने कहा हम नहीं पहचान पाए तब परमहंस जी ने शहद और सिंदूर मंगाया अपने घुटने पर लगा कर लोहे की कील से चीर (क्रास) किया तो अघोरी का मस्तक कट गया खून निकला आकर्षण मंत्र पढ़ा तब वह गोकुल आया और रोकर कहा मैं गाय हूँ दातों में घास दबाकर बोला मुझे बचाओ रक्षा करो मैं आपकी गैया हूँ। आप बोले–तूने संतों को दुःख दिया है तुझ पर दया नहीं की जायेगी। एक घण्टे तक रोता रहा तब संतों ने प्रार्थना की महाराज क्षमा करो तब कटोरी में जल लेकर मंत्र पढ़कर कहा इसे पी लो तो रोने लगा मेरी विद्या फेल हो जायेगी मैं १२ साल में इस अघोरी विद्या को सिद्ध कर पाया हूँ तो कहा तीन बार गुरु गोविंद की सौगंद खाओ और बोल कि आज से संतों को नहीं सताऊँगा यह शब्द सुना तो अघोरी ने तीन बार सौगंध खाकर कहा मैं संतों को कभी भी नहीं सताऊँगा तब श्री परमहंस जी ने तेल लगा कर घुटने पर फेरा और कपड़े से पोंछा तो अघोरी ठीक होकर भागा चला गया तब श्री महन्त जगन्नाथ दास जी डंडीया के साधक शिष्य बने और ५००० साधुओं की जमात भारत वर्ष में घुमाई।

और फिर जमात घूमते–घूमते मुल्तान पहुँची जो हिरण्यकशिपु की राजधानी पहले थी। वहां काबुल का एक मौलवी एक ऊँट, सवा मन मेवा, ५ असर्फी श्री महन्त जी को आकर नजर की और कहा कि हमारा ऊँट कुरान शरीफ की आयत बोलता है– ''व यखरजुल हैय मिनल मइयते'' इसलिए हम इस ऊँट पर सवारी नहीं कर सकते और न कोई अन्य काम में ले सकते। श्री महन्त जी ने ऊँट के गले में तुलसी की कंठी बाँध दी और जानकीदास नाम रख दिया। श्री जानकीदास जी एक सेर गाँजा तम्बाकू की चिलम, हुक्का की नली मुँह में लगाकर रोज पीते थे आरती बाद मंदिर में ठाकुर जी के सामने दण्डौत में अपनी गर्दन आगे रख देते थे। स्तुति में अपनी आवाज में बलबल बोलते रहते थे। सन्तों का आसन पीठ पर रखकर ले जाते और अगर कोई बूढ़ा साधुथक जाय तो उसे अपनी पीठ पर रखकर ले जाते। इस प्रकार १२ साल तक श्री जानकीदास जी ने सेवा करके श्रीभगवत–धाम प्राप्त किया।

**दोहा.– जहाँ जहाँ सन्त फिरत हैं, तहाँ–तहाँ करें निहाल।**
**दीक्षा दीन्हीं ऊँट कों, ऐसे दीनदयाल॥**

'श्री सीताराम जी'

**शाम सबेरे दो पहर हरि को पलहुँ न भूल**
**तन सेवा मन ध्यान में वचन से बरसे फूल।**
**वचन से बरसे फूल करों प्रिय सबसे बानें**
**तन हे प्रभु की देन काज करियों दिन रातें,**
**रामदास मन राम में यही मुक्ति का मूल**
**शाम सबेरे दो पहर हरि को पलहुँ न भूल**

❖❖❖

गुरु किए तो कहा भयों जो न मिटा सन्देह
छतरी धारे कहा भयों भींज गई सब देह
भींज गई सब देह आसुरी वृति बाढ़ी
नहीं राम के नाम प्रीत उपजी अति गाढ़ी
रामदास नश्वर जगत तासों बढ़े सनेह
गुरु किए तो कहा भयों जो न मिटा सन्देह

❖❖❖

श्री गुरुदेव दयालु दया करि दीनन देखो
पाप ताप संताप दुःख दुखिया के पेखो
है भवसिन्धु अपार शास्त्र श्रुति संत बखानो
बिनु करुणा गुरुदेव कहूँ नहिं ठौर ठिकानो
गुरु पूनो सिय पिय मिलन अष्टमी मंगल दायिका
'रामदास' दुइ पर्व ये शिष्यन सदा सहायिका।

❖❖❖

चाहे जैसे समझ लो तीन बीसी और साठ
तीन बीसी और साठ समझ में अब यह आई
श्री गुरु और श्री राम ब्रह्म दोउ एकहि भाई
श्री राम कहें गुरु अधिक करो उनही की सेवा
गुरु कहें श्री राम भजो देवन के देवा
रामदास श्री राम भज मानस को करो पाठ
चाहे जैसे समझ लो तीन बीसी और साठ

❖❖❖

मंगलमय गुरु नाम जपत रसना मंगल-मय
मंगलमय गुरु चरित्र श्रवण मन दोउ मंगलमय
मंगलमय गुरु मूर्ति निरखि दोउ दृग मंगलमय
मंगलमय सतसंग जहाँ श्रोता मंगलमय
रामदास मंगल सदा करह धाम मे पग धरो
मंगलमय पटिया निरखि मंगलमय जीवन करो।

❖❖❖

जूती पहिरे फिरत हैं सन्त गुरु पग माँहि
तिनमें रज जो लग गई तेहि समान कछु नाँहि
तेहि समान कछु नाँहि हरे कलि की करतूती
उभै लोक सुख देत मिले हरि भक्ति अकूती
रामदास रज शरण गहि सन्त गुरु पद माँहि
जूती पहिरे फिरत हैं सन्त गुरु पद माँहि

❖❖❖

बिन करूणा गुरुदेव मिटे नहिं खटपट मन की
अटपट जग की जाल चाल भई लटपट मन की
झटपट दर्शन करह सिद्ध स्थल में आके
चटपट होय प्रकाश ध्यान गुरु का उर लाके
रामदास विश्वास गहि गुरु चरनन में जो लगे
सिद्ध भूमि पटिया निरखि चरणामृत लो अघ भजे॥

❖❖❖

पहिले सबसे बड़े हैं सन्त दूसरा नाम है।
तीसरे दस अवतार जिन्हें परनाम है॥
इनका भेद बताय करावत सेव है
सब देवन के देव मेरे गुरुदेव हैं
रामदास ऊँचा किया था नीचन से नीच
समर्थ श्री गुरुदेव हैं नश्वर जग के बीच

❖❖❖

कलि से व्याकुल जीव शरण में जिनकी आते
जगत जाल में फँसे दुखी छुटकारा पाते
जिनके कर की छाँह सदा त्रयताप नसायो
अरे देव दुर्देव कहाँ वह रूप छिपायो
छली प्रपची अधम लखि दृग से ओझल हो गए
श्री राम राजा के प्राण में प्राण में धरोहर धर गए

❖❖❖

जिनके सुखमय मृदुल वचन को श्रवरा तरसते
जिनके दर्शन काज नयन नित अश्रु बरसते
जिनके पद को गहन हाथ दिन-रात भटकते
मिलत नहीं हैं यहीं भक्त जन शीश पटकते
मरे नहीं वो हैं अमर सतं चित आनन्द कन्द हैं
हमें अभागा जानकर दर्शन देना बन्द हैं

❖❖❖

नौ दिन तो चलते गए चले अढ़ाई कोस
मानव बनि नहिं हरि भजो किसको दीजे दोष
किसको दीजे दोष शास्त्र आज्ञा नहिं मानी
जन्म मरण दुख पाय चेत अवहूँ अज्ञानी
रामदास या चाल पर कहा करत सन्तोष
नौ दिन तो चलते भए चले अढ़ाई कोस

❖❖❖

कुतिया चोरन मिलि गई को केहि पहिरो देय
संतन के सतसंग में यह रहस्य सुनि लेय
यह रहस्य सुनि लेच चेत मुरख मन मेरो
ज्ञानेन्द्रिय से ज्ञात लहे तजि अज्ञान अँधेरो
रामदास इन्द्री बिमुख हरि तजि विष रस लेय
चोरन कुतिया मिलि गई को केहि पहिरो देय

❖❖❖

नंगा ठाढ़ो गैल में चोर बलैया लेय
बीत राग को सुख अमित संग्रह ही दुख देय
संग्रह ही दुख देय प्रभु विश्वास मिटावे
काम क्रोध मद लोभ मोह अभिमान बढ़ावे
रामदास अलमस्त रहु शरण गुरु के लेय
नंगा ठाढ़ो गैल में चोर बलैया लेय

❖❖❖

घर को परसैया अहे और अँधेरी रात
और अँधेरी रात जन्म मानुष को पायो
भरत खंड शुचि भूमि ब्रह्म जहँ विचरन आयो
गंगा जमुना निकट धाम दर्शन के काजे
संतन को करि संग राम गुण सुनि अध भाजे
रामदास गुरु कृपा से भली बनी है बात
घर को परसैया अहे और अंधेरी रात

❖❖❖

गई सुहागिन रॉड़ ढिग छुये वाके पाँय
बहिन मोसी हूजिए दई आशीष सुभाय
दई आशीष सुभाय यही गति हैं साधुन की
सबही हमसे बनो आस छोड़ो घर धन की
रामदास सियाराम कहि भव सागर तरि जाय
गई सुहागिन रॉड़ ढिंग छुवे वाके पाँय

❖❖❖

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं गुरु बड़े महादेव
और कछु नहिं चाहिए निश दिन तुम्हरी सेव
निश दिन तुम्हरी सेव यही अभिलाषा मेरी
बिना कृपा के बने नहीं सबसों कहौ टेरी
रामदास गुरु कृपा से जानत सबही भेव
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं गुरु बड़े महादेव

❖❖❖

नर तनु प्रभु की देन हैं प्रभुहि सो करि हेत

सब जीवन पर दया करि सत संगति में चेत

सतसंगत में चेत किसी को दुख न देना

करो सभी का भला नाम नित हरि का लेना

रामदास जो चूक की तो मरि के बनिहो प्रेत

नर तनु प्रभु की देन हैं प्रभुहि सों करि हेत

❖❖❖

साधु कहावे वे भले हैं भगवत के चोर

गुरु शरणागत मंत्र ले जपत नहिं निशि भोर

जपत नहिं निशि भोर दीन पर दया न आई

करनी कथनी भिन्न साधु की रहनि न आई

रामदास इन नरन को नरक न देते ठौर

साधु कहावे वे भले हैं भगवत के चोर

❖❖❖

अंधा बाँटे जेवरी पीछे बच्छा खायं

अहंकार की आग में भीतर ही धुंधयाय

भीतर ही धुंधयाय काम और क्रोध लुटेरा

लोभ मोह मद मान कियो हृदय में डेरा

रामदास करें भजन जो वो दुर्गुण देय बहाय

अंधा बाँटे जेवरी पीछे बच्छा खाय

❖❖❖

कर्महीन कल्पत फिरे कल्प वृक्ष की छाँह
राम हृदय में ही रहत समुझत नहिं मन माँहि
समुझत नहिं मन माँहि जोई माँगे सोइ पावे
अज्ञानी यह जीव भोग माँगकर दुख उठावे
रामदास समझे तभी गुरु गहे जब वाँह
कर्महीन कल्पत फिरें कल्प वृक्ष की छाँह

❖❖❖

दया दृष्टि श्री राम की सदा भक्त के साथ
कोई लखे कुदृष्टि सों धनुष बाण हैं हाथ
धनुष बाण हैं हाथ दण्ड दे जनहित करही
ऐसे करुणा धाम राम तजि भव में परहीं
रामदास पद कमल में झुके स्वप्न में माथ
दया दृष्टि श्री राम की सदा भक्त के साथ

❖❖❖

सूरत बनी चुड़ेल सी परियन सरिस मिजाज
साधु वैश्णव नाम के करें असुर के काज
करें असुर के काज धन्य प्रभु तेरी माया
उलट फेर का दृश्य देखकर मन भरआया
रामदास जो सुख चहे गुरु शरण में भाज
सूरत बनी चुड़ेल सी परियन सरिस मिजाज

❖❖❖

चंचल दृग शंकित हृदय दधि में दीन्हें हाथ
इत उत चिचवन मातुभय जदपि अहें जग नाथ
जदपि अहे जगनाथ जगत को देते शिक्षा
चोरी कर्म निषिद्धि भली है याते भिक्षा
रामदास लखि श्याम की लीला नावत माथ
चंचल दृग शंकित हृदय दधि में दीन्हें हाथ

❖❖❖

चाह सदा दुख रूप है करत सबे गुमराह
चाह मिटें चिन्ता मिटी मनुआं वे परवाह
मनुआं वे परवाह मस्त हो जग में डोले
राम राम सियाराम प्रेम से मुख से बोले
रामदास यह चाह है उठे न मन में चाह
चाह सदा दुख रूप है करत सबे गुमराह

❖❖❖

अब भरोसा दृढ़ उर भयो करें कृपा रघुराय
बन्दरन पर ममता जिन्हें सिर पर लिए चढ़ाय
सिर पर लिए चढ़ाय आँख मेरी धँसि गई
पिचक गए दोउ गाल शकल हौआ सी बनि गई
रामदास दर्पण लखो बन्दर शकल लखाय
अब भरोसा दृढ़ उर भयो करें कृपा रघुराय

❖❖❖

पशु मति मेरी देखि के काहे नाथ घिनात
पशु बने पशु संग रहे सुनी पशुन की बात
सुनी पशुन की बात रीछ बन्दरन के स्वामी
गुण उनके नहीं कछू दोस दुर्गुण में नामी
रामदास अपनाइए अब तो हा हा खाय
पशु मति मेरी देखि के काहे नाथ घिनात

❖❖❖

तुम सो स्वामी पाय के करो कौन की आस
अपनो कूकुर जानि के सदा राखिए पास
सदा राखिए पास नाम गुण तुम्हरो गाऊँ
तजिन के प्रभु को द्वार अनत कितहूँ नहिं जाऊँ
रामदास कूकुर तेरो जाऊँ कौन के पास
तुमसों स्वामी पाय के करो कौन की आस

❖❖❖

चोरन कुतिया मिलि गई को केहि पहरो देय
निर्भय घुसि के भवन में वस्तु घनेरी लेय
वस्तु घनेरी लेय बुद्धि मेरी है कुतिया
काम क्रोध हैं चोर नचावें गहि के चुटिया
रामदास मन मस्त हो मन मानी करि लेय
चोरन कुतिया मिलि गई को केहि पहरो देय

❖❖❖

हम वासी वा देश के जिसे कहत साकेत
जिसे कहत साकेत श्रुति जाके गुण गावे
शंभु शारदा शेष महत्व कहि अंत न पावे
सत्य धाम वैकुंठ वहिश्त से परे विराजे
राम धाम सत चित्र नित्य धामन सिरताजे
हँसन की कहा चली परमहंसहु ललचावे
बिना कृपा श्री राम स्वप्न में दर्शन पावे
त्रिगुण त्रिवेष त्रिवेद काल की गति जहँ नाहीं
दिव्य किशोर स्वरूप भक्त सुख सिन्धु समाहीं
नाम रूप गुण भेद जहाँ कतहूँ नहिं दरसे
होर अभेद पुनि भेद भाव से सुख में सरसे
रामदास पहुँचे वही नहीं काहू सों हेत
हम वासी वा देश के जिसे कहत साकेत

❖❖❖

धरती एक विस्वा नहीं नाम धरो भूपाल
नाम धरो भूपाल दीन पे दया न आई
षट विकार नहिं तजे भजे नहिं श्री रघुराई
दहे मान की अग्नि ज्ञान वैराग्य न धारो
नवधा प्रेम परा भक्ति सो नातो टारो
रामदास कैसे बने फँसे विषय के जाल
धरती एक विस्वा नहीं नाम धरो भूपाल

❖❖❖

दो घर केरा पाहुना भूखा ही रहि जाय
भूखा ही रहि जाय चेत मन नखन पायो
स्वांस स्वांस प्रति नाम लेहूँ कहि बाहिर आयो
सो मूरख गयो भूल बनो इंद्रिन को चेला
पढ़ि प्रपंच चटसार परो फिर जम की जेला
रामदास इत भजन में उत विषयनि लपटाय
दो घर केरा पाहुना भूखा ही रहि जाय

❖❖❖

भेड़ पूछे भादो नदी केहि विधि उतरे पार
केहि विधि उतरे पार भजन में करि मति देरी
पाप पुण्य दोउ जान लोह सोने की बेरी
पाप कर्म करि त्रिजग जोनि में चक्कर खावे
शुभ कर्मन से स्वर्ग भोग फिर जंग में आवे
रामदास हरि भजन तजि है सबही सिर भार
भेड़ पूछे भादो नदी केहि विधि उतरे पार

❖❖❖

ज्यों हाथी के पाँव में सबको पाँव समाय
सबको पाँव समाय नाम प्रभु को जिन्ह लीना
जोग जग्य वैराग्य ज्ञान जप तप सब कीन्हा
व्रत तीरथ उपवास त्याग तप से जो पावे
सो सहजहि मिलि जाय कपट तजि गुण गावे

रामदास प्रभु ध्यान सो सृष्टि ध्यान हो जाय
ज्यों हाथी के पाँव में सबको पाँव समाय

❖❖❖

आपुन टेठ न देखहीं फुली निहारे आन
फुली निहारें आन इन्हें क्या पड़ी बिरानी
प्रति श्वासा रटि नाम मान सब गुरु की वानी
सब जग भगवत रूप दोष फिर किसका देखें
सबमें राम लखाय राम मय सबको लेखे
रामदास इन नरन को कैसे कल्यान
आपुन टेठ न देखहीं फुली निहारें आन

❖❖❖

गुरु कहें सो कीजिए गुरु करें सो नाहि
गुरु ब्रह्मा तुम जीव हो है शास्त्रन के माँहि
है शास्त्रन के माँहि गुरु की करना सेवा
ब्रह्मा विष्णु महेश गुरु देवन के देवा
रामदास गुरु शरण गहि भव सागर तरि जाहि
गुरु कहें सो कीजिए गुरु करें सो नाहि

❖❖❖

कहा गाय ने दुखी हो सुन बेदरदी ग्वाल
बछड़ा भूखा रहत है लेता दूध निकाल
लेता दूध निकाल मिलाता उसमें पानी

गाली हम पर पड़े गाय दूध देती या पानी
मृत्यु लोक में आय एक दिन सबको जाना
करनी का फल मिले चले नहिं एक बहाना
रामदास जमदूत फिर खेचे तेरी खाल
कहा गाय ने दुखी हो सुन बेदरदी ग्वाल

❖❖❖

जाना है रहना नहीं जाना विस्वा बीस
कुछ दिन फँस्सि के जगत में भूल गया जगदीश
भूल गया जगदीश गर्भ में की गारंटी
स्वाँस स्वाँस लूँ नाम हुआ अब क्यों वारंटी
रामदास होशियार रहु काल घूमता सीस
जाना है रहना नहीं जाना विस्वा बीस

❖❖❖

मन्दिर में दीपक जले, बाहर लखे न कोय
भीतर से बाहर करत बुझे मंद गति होय
बुझे मंद गति होय प्रेम धन उर में राखो
दुख विदा होइ जाय प्रेम मुख से जब भाखो
रामदास हरि प्रेम को राखो हिय में गोय
मन्दिर में दीपक जले, बाहर लखे न कोय

❖❖❖

गज की झुलि विशाल अति गदहा दई उढ़ाय
सुख सोवन की को कहे उलझि पुलझि मर जाय

उलझि पुलझि मर जाय साधु का वेष बनाय
भूलि गए भगवान भोग में चित लगाय
रामदास गुरु कृपा करि दीन्हो हंस बनाय
गज की झुलि विशाल अति गदहा दई उढ़ाय

❖❖❖

जड़ी दीन्ह गुरुदेव ने अमृत रस भरपूर
कायर मर्म न जानहीं जानहि बिरला सूर
जानहिं बिरला सूर संत रहनी जेहि पाई
मन भुजंग और पाँच नागिनी सूँधे मरि जाई
रामदास यह परम धन चितवत रहो जरूर
जड़ी दीन्ह गुरुदेव ने अमृत रस भरपूर

❖❖❖

चेला तो समझा नहीं गुरु के अटपट बैन
रात दिना उपदेश ही बन्द करो दोउ नैन
बन्द करो दोउ नैन शिथिल इन्द्रिय को करना
मन में हरि का ध्यान रखि जीते जी मरना
रामदास गुरु कृपा से सुआ समझ गया सैन
चेला तो समझा नहीं गुरु के अटपट बैन

❖❖❖

चाखि दाख के स्वाद को कौन निबोरी खात
कौन निबोरी खात विषय सब विष सम लागे

जब मन सीताराम नाम में अति अनुरागे
ब्रह्मादिक के भोग रोग सम लागें बाको
उर में राम लखाय गुरु अपनायों जाको
रामदास कहें चूक मत बनी बनाई बात
चाखि दाख के स्वाद को कौन निबोरी खात

❖❖❖

माया मोह के बीच में फँसो चूतिया चित्त
फँसो चूतिया चित्त बात नहिं मानत मेरी
कर जीवन पर दया भजन में करि मति देरी
ग्रास ग्रास अरु स्वांस स्वांस में राम पुकारो
ब्रह्ममयी सब सृष्टि दृष्टि में हो उजियारो
रामदास समझत नहीं कथा सुनत हैं नित्त
माया मोह के बीच में फँसो चूतिया चित्त

❖❖❖

वीर बली बजरंग ने वश कीन्हो परिवार
वश कीन्हो परिवार मुद्रिका सिय को दीन्हो
चूड़ा मणि कह जय राम को दुख हरि लीन्हो
लाय सजीवन लखन लाल को प्राण बचायो
जाय अवध कहि कुशल भरत को शोक मिटायो
रामदास हनुमत कृपा राम मिलावन हार
वीर बली बजरंग ने वश कीन्हो परिवार

❖❖❖

पटिया पर आसन कियो श्री गुरु वर्ष पचास
बाको चरणामृत पिये होइ पाप को नाश
होइ पाप को नाश भजन की महिमा भारी
जड़ से है चैतन्य हरत जन पीड़ा भारी
रामदास पर करि कृपा पटिया तेरी आस
पटिया पर आसन कियो श्री गुरु वर्ष पचास

❖❖❖

देवी दर्शन को चले राम नाम मुख लेय
ता संग लांगुर वीर रहे कोऊ दुख न देय
कोऊ दुख न देय सदा रक्षा में रहना
दिया मात ने हुक्म राम तुमहु नित कहना
रामदास ते धन्य नाम के निश दिन सेवी
महिमा समुझि अपार जपत है कैला देवी

❖❖❖

तपो भूमि है पत्रिका, तपो भूमि स्थान
दोहन में को अति सुगम सोचो संत सुजान
सोचो संत सुजान धाम में चलकर जावे
करे द्रव्यहू खर्च तबे दर्शन सुख पावे
जो पत्रिका वाचि भक्त घर सबहि सुनावे
तपो भूमि स्थान करह पर मनि चलि जावे
रामदास कलि जीव को उभय भाँति कल्यान
तपो भूमि हे पत्रिका तपो भूमि स्थान

❖❖❖

❑❖❑❖❑

पूज्य बाबा रामदास जी महाराज
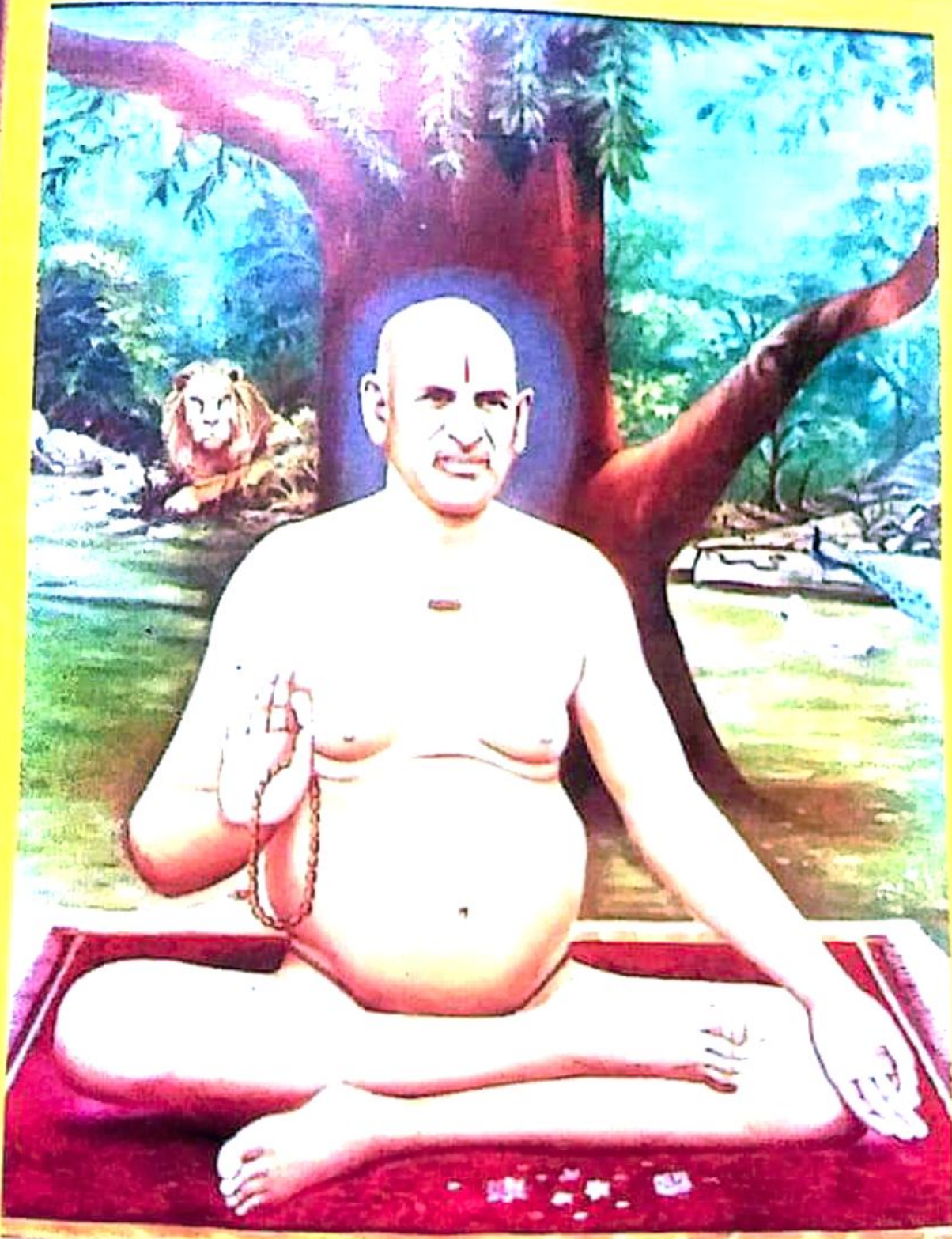
श्री पूज्य बड़े बाबा रामरतनदास जी महाराज
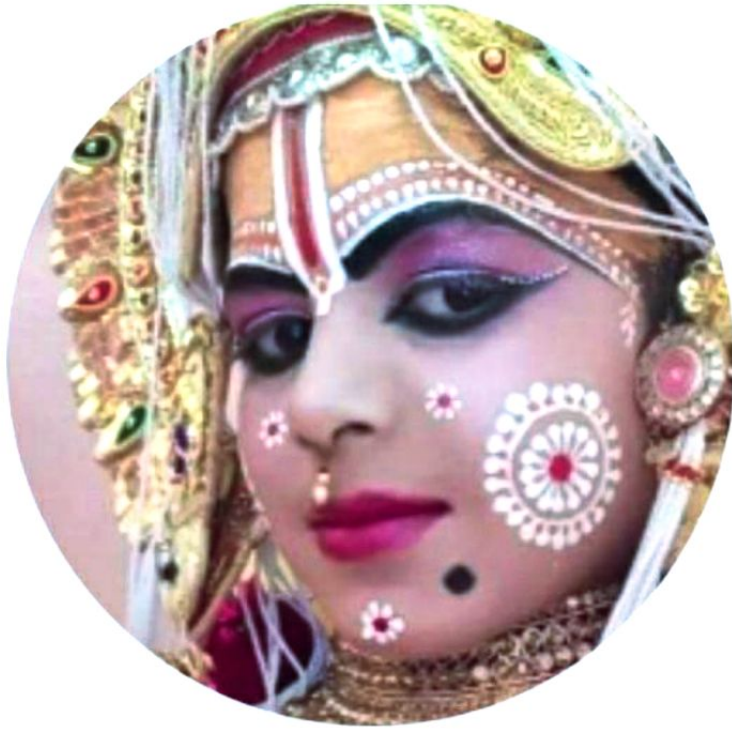
श्री पूज्य बाबा रामरतनदास जी महाराज

श्री पूज्य बाबा रामरतनदास जी महाराज
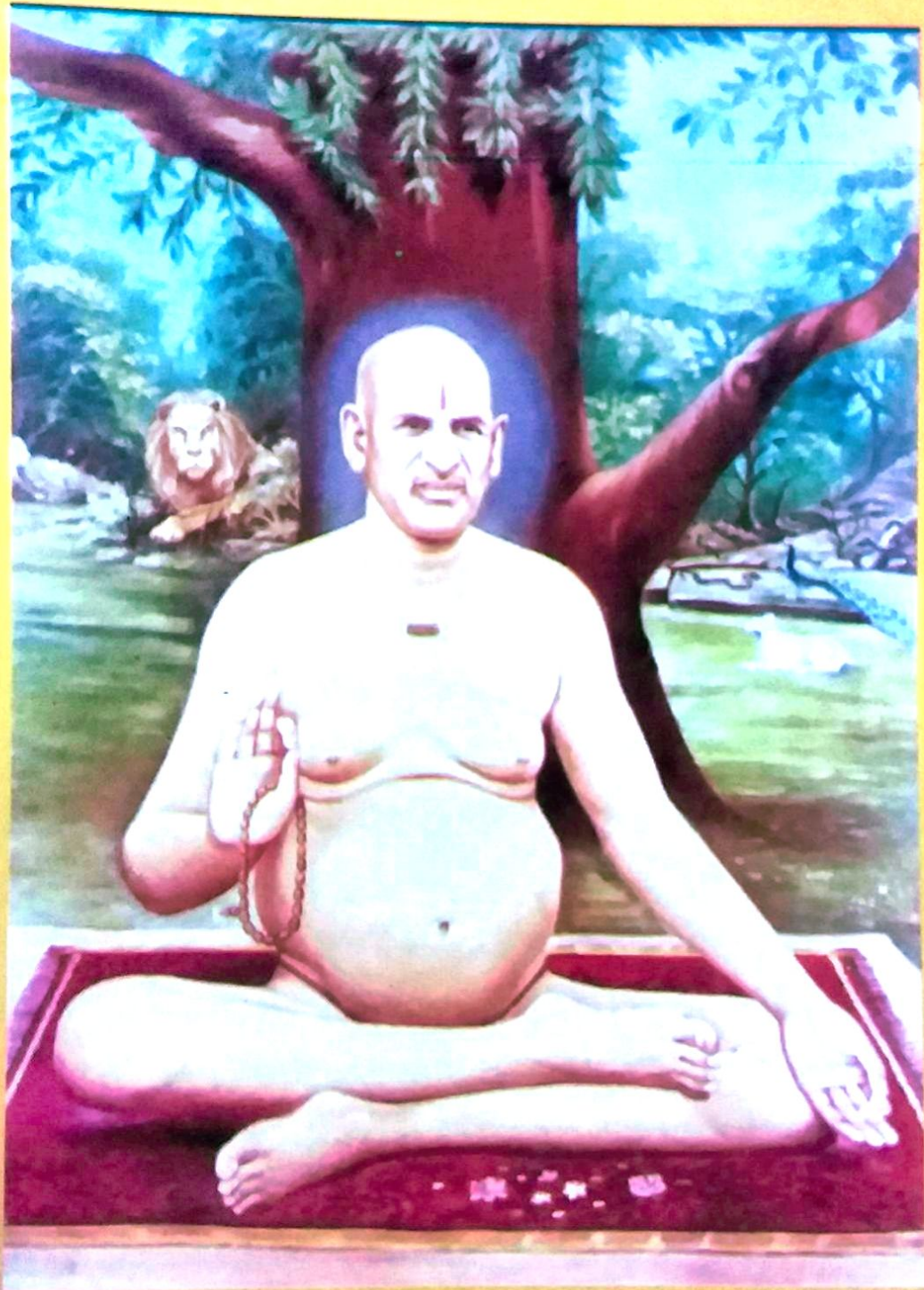
श्री पूज्य बड़े बाबा रामरतनदास जी महाराज

श्री पूज्य तपसी जी महाराज
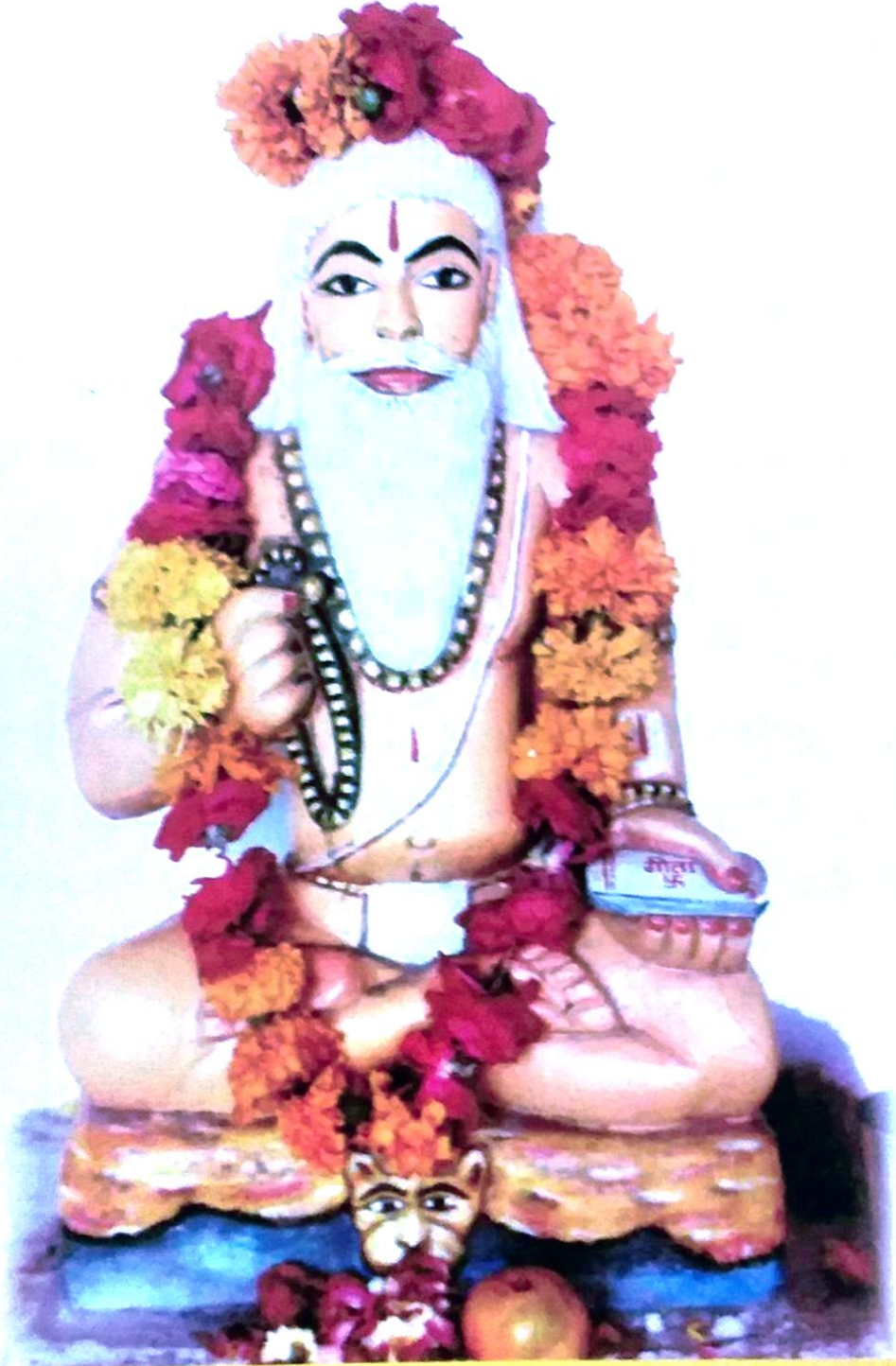
श्री पूज्य सिद्धबाबा महाराज

श्री पूज्य करह दरबार करह धाम

Pawan/13-10-2021
https://www.facebook.com/KanakBhawanAyodhya
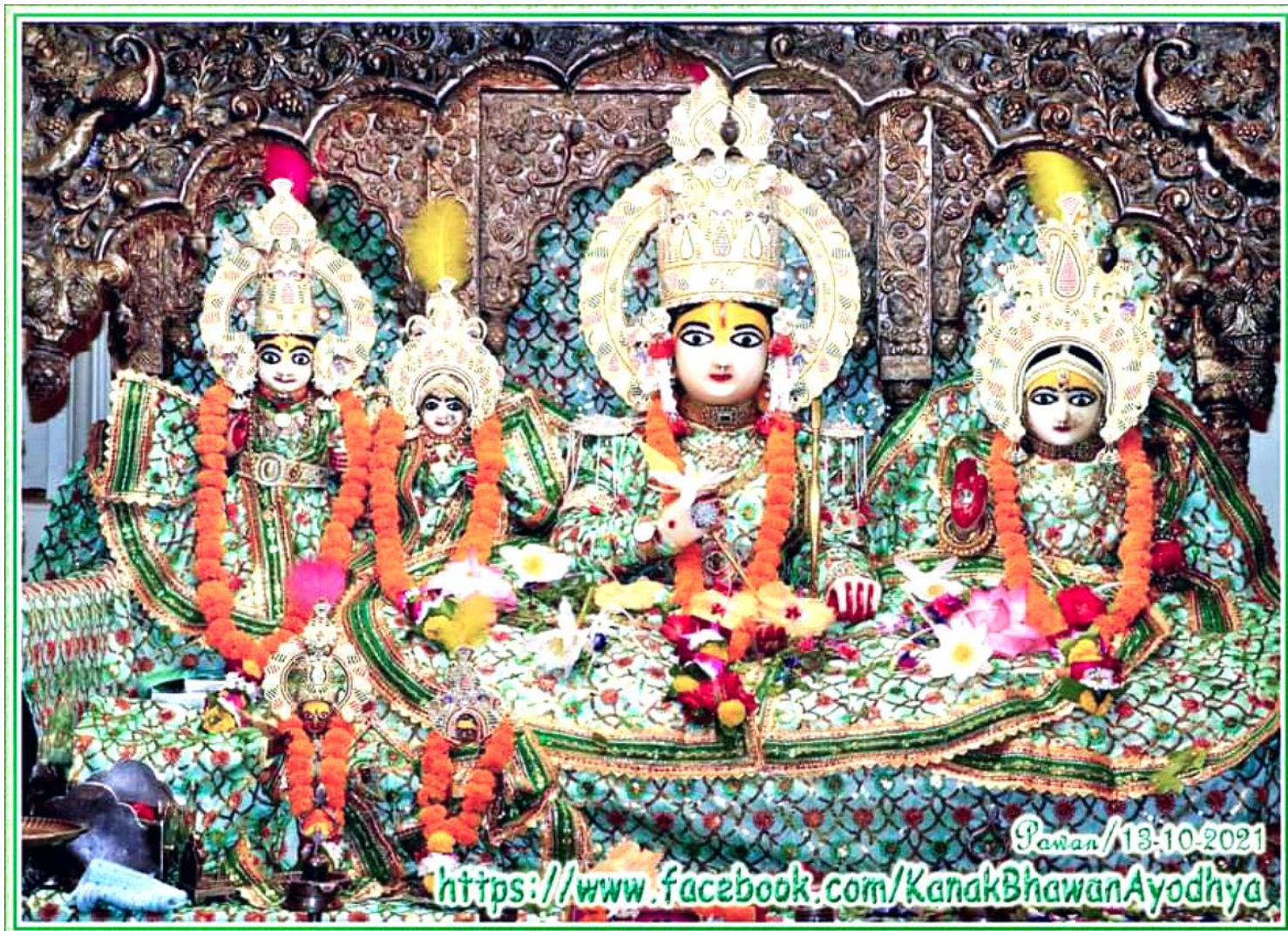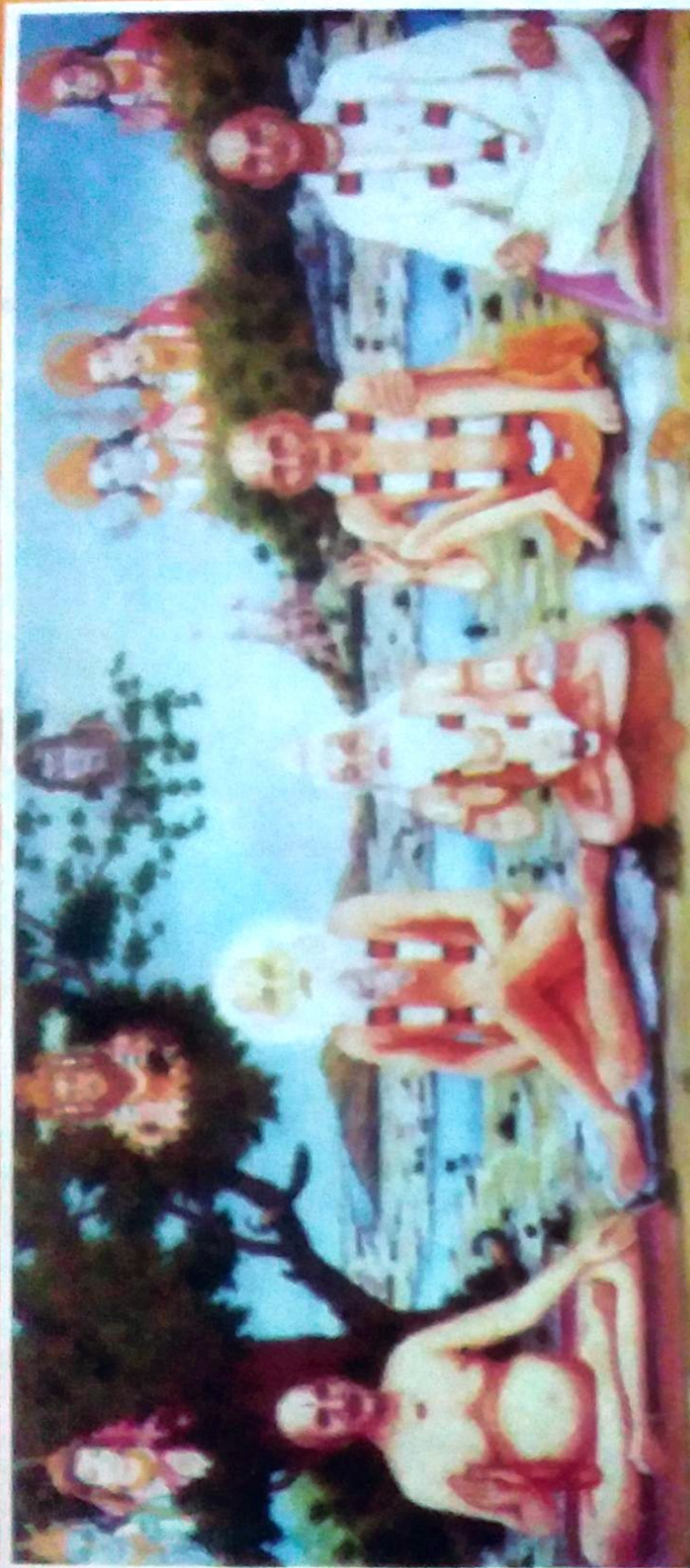
श्री 108 बाबा रामरतन दास जी महाराज, श्री 108 तपसी श्री सीताराम दास जी महाराज
श्री 108 श्री सिद्ध बाबा, श्री 108 लखनदास जी महाराज
श्री 108 रामदास जी महाराज